<u>विषय वस्तु</u>

<u>प्रथम दिवस</u>

<u>विषय</u>	<u>समय</u>
♦ यह प्रशिक्षण क्यों ?	
♦ प्रशिक्षण पूर्व तैयारी	
♦ प्रशिक्षकों के लिये	
♦ प्रशिक्षण के मध्य	
♦ प्रशिक्षण के बाद	
♦ प्रतिभागियों का परिचय	४० मिनट
♦ परियोजना के अंतर्गत हुए पूर्व प्रशिक्षण पर चर्चा	२५ मिनट
♦ प्रशिक्षण से अपेक्षायें चर्चा व प्रस्तुतीकरण	३० मिनट
♦ प्रतिभागियों का आत्मविश्लेषण	३५ मिनट
♦ चाय अवकाश	१० मिनट
♦ मेरा परिवार अभ्यास कार्य	२० मिनट
♦ मेरा परिवार प्रस्तुतीकरण, चर्चा	३० मिनट
♦ प्रतिभागियों का आत्मविश्लेषण, प्रस्तुतीकरण व चर्चा	४५ मिनट
♦ भोजनावकाश	
♦ लिंग भेद के कारण व्यवहार में अन्तर	१ घण्टा
♦ कहानी – प्रस्तुतीकरण व चर्चा	४५ मिनट
♦ शिक्षक एवं कक्षा कक्ष	१ घण्टा
♦ जेण्डर क्या है	४५ मिनट
♦ जेण्डर क्या नहीं है	३० मिनट

यह प्रशिक्षण क्यों ?

डी.पी.ई.पी. का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनिकरण है। इस उद्देश्य को सफल बनाने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में समस्याओं को चिन्हित करना, उसका समाधान करना तथा कार्यान्वित करना डी.पी.ई.पी. की प्राथमिकता है। बालिकाओं के प्रति विषमता, एक ———————— गम्भीर समस्या है, जिसको दूर न किये जाने से सभी के लिये शिक्षा तथा उस लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये समाज के विभिन्न स्तरों में व्याप्त विषमताओं को दूर करना आवश्यक है। तभी बालिकाओं के प्रति समदर्शिता (समभावों) संभव होगी।

इसी परिप्रेक्ष्य में डी.पी.ई.पी. में बालिका तथा वंचित वर्ग के बालक जो अभी विद्यालय नहीं गये हैं, उनके लिये विभिन्न रणनीतियां तैयार की गयी हैं, जैसे उनका विद्यालय में नामांकन, शालात्याग रोकना तथा सम्प्राप्ति स्तर बढाना। शिक्षक, शिक्षा कर्मी, अभिभावक व समुदाय के माध्यम से इस रणनीति को क्रियान्वित किया जायेगा। दैनिक जीवन में हम सभी स्त्री पुरूष में भेदभाव का व्यवहार करते हैं। व्यवहारिक सामाजिक परिवेश में इसे नकारा नहीं जा सकता है। शिक्षक–शिक्षकायें भी इसी समाज का एक अंग हैं। इसी कारण प्रायः देखा जाता है कि कुछ शिक्षक–शिक्षकाओं का मनोभाव इस विषमता से मुक्त नहीं है तथापि इन्हीं शिक्षक–शिक्षकाओं का ही मुख्य कर्त्तव्य है कि प्रचलित धारणा अर्थात बालक बालिका के भेद को दूर करना। इन सभी समस्याओं पर विचारोपरांत इस पुस्तक की रचना करने की आवश्यकता अनुभव हुयी।

संक्षेप में प्रशिक्षण का निम्न उद्देश्य है–

१. बालक बालिका एक समान की संकल्पना को कोरी कल्पना न समझकर वास्तविकता के रूप में बदलना ।
२. व्यक्ति, संघ या समितियां अपने–अपने स्तर पर शिक्षा विशेषकर बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा डी० पी० ई० पी० के उद्देश्यों की पूर्ति में मदद करेंगे ।
३. शिक्षा की समस्याएं तथा बाधाओं पर चर्चा कर दूर करने का प्रयास करेंगें ।
४. शिक्षक विशेष रूप से बालिकाओं की नियमित उपस्थिति ठहराव व सम्प्राप्ति पर विशेष ध्यान दे सकेगें।
५. आज की परिस्थितियों को देखते हुए बालिका संवेदीकरण में बालिकाओ को भिन्न न समझते हुये बालक व बालिकाओं को खेल, शिक्षा, अतिरिक्त दायित्व, घर के कार्य व कक्षा में समान भागीदारी सुनिश्चित करना।
६. संख्यात्मक विश्लेषण द्वारा बालिकाओं की स्थिति का आंकलन करना कि कितनी लड़कियाँ स्कूली शिक्षा से वंचित हैं।
७. परिवार व समाज में होने वाले विभेद के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना जिससे की यह समझ बन सके कि लड़कियाँ और लड़के सभी एक समान शिक्षा व प्यार पाने के अधिकारी हैं।
८. समूह चर्चा एवं समस्या समाधान के द्वारा यही विचार उत्पन्न करना कि लड़कियां कमजोर, निर्बल दयनीय व असमर्थ नहीं हैं।उनके अन्दर भी वह सभी क्षमताऐं हैं जो बालकों में समझी जाती है।

९. न्याय पंचायत समन्वयक, बहुउद्देशीय कर्मी, अध्यापक एवं माता पिता को सचेत करना तथा बालिका शिक्षा के प्रति उत्तरदायी बनाना।

१०. बालिकाओं को विद्यालय तथा विद्यालय से बाहर होने वाली गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में समान अवसर देने के लिये प्रेरित करना।

११. कक्षा कक्ष कौशल विकसित करना तथा विद्यालयी वातावरण बालिका शिक्षा को किस प्रकार प्रोत्साहित कर सकता है।

प्रशिक्षण पूर्व तैयारी :–

- न्याय पंचायत समन्वयक सभी अध्यापक, प्रधानों के साथ मिलकर, बैठकर ग्राम सभावार बालिका नामांकन तथा जनसंख्या के आंकड़े एकत्र करें।
- तिथि एवं स्थान निर्धारित कर सबको सूचित कर गॉव की ऐसी लड़कियों की सूची बनाना जो विद्यालय नहीं जा रही है।

प्रशिक्षण संबंधी सामग्रीः– चार्ट, पेपर, सेलोटेप, रजिस्टर, सादा पेपर, सकेच पेन, मार्कर पेन, पेन्सिल, कक्षा 3–5 तक की पाठ्य पुस्तकें, फूल पत्ती आदि।

<u>प्रशिक्षकों के लिये</u>

- प्रतिभागियों के साथ गोलाकार रूप में बैठें।
- एक ऐसे सरल भाईचारापूर्ण माहौल का निर्माण करें जिसमें प्रतिभागी स्वयं को सहज महसूस करे।
- किसी विशेष व्यक्ति के प्रति आपका ध्यान केन्द्रित न हो।
- ऐसे प्रतिभागी जो संकोची व अंतर्मुखी हैं उन्हें बोलने के लियें प्रेरित करें।
- प्रतिभागियों के सुझाव या राय यदि उपयुक्त नहीं है तो उन्हें व्यंग न करें बल्कि उन्हें उनके सुझाव उपयुक्त न होने के कारण बतायें।
- प्रशिक्षक अपने व्यवहार या बातचीत में यह न दर्शाये कि उन्हें प्रतिभागियों से ज्यादा ज्ञान है। ऐसा दर्शाने से उनके व प्रतिभागियों के बीच मित्रतापूर्ण व्यवहार नहीं स्थापित हो सकेगा।
- प्रत्येक सत्र के संचालन हेतु आपको कुछ विशेष सामग्रियों एवं प्रस्तुतियों की आवश्यकता होगी। ये सभी आपके पास है या नहीं इसका विशेष ध्यान रखें। विषय की प्रस्तुतिकरण के लिये आप स्वयं को पहले से ही तैयार रखें। सभी समस्याओं का समाधान प्रशिक्षकों के साथ बैठकर ही करें। प्रत्येक दिन की कार्यपद्धति के विषय में प्रस्तुतिकरण, विषय–वस्तु तथा पद्धति निर्धारण पूर्व में ही कर लीजिये। कार्य का विभाजन करें तथा महिला व पुरूष दोनों के दायित्वों को अनदेखा न करें। जरूरत महसूस हो तो उपरोक्त का पूर्वाभ्यास कर लें।

प्रशिक्षण के मध्य :–

- ♦ सन्दर्भदाता आपस में व प्रतिभागियों के मध्य ज़िम्मेदारियों को बांट लें।
- ♦ प्रतिभागियों के साथ सद्‌भाव व सहयोगी वातावरण बनाये रखें।
- ♦ प्रथम दिन का पुनरावलोकन कर अगले दिन की कार्ययोजना बना लें तथा अगले दिन के लिये उपयोग में आने वाली सामग्री की व्यवस्था सुनिश्चित कर लें।
- ♦ संदर्भदाता प्रशिक्षण का मूल्यांकन कर प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करें तथा होने वाली कमी में सुधार करें।

प्रशिक्षण के बाद :–

- ♦ प्रशिक्षण तथा संदर्भदाताओं का मूल्यांकन प्रतिभागियों द्वारा कराया जाये।
- ♦ पूरे प्रशिक्षण का कार्यवृत्त बनाकर अपने ब्लाक समन्वयक को प्रेषित करें।
- ♦ संदर्भदाता व प्रतिभागी संयुक्त रूप से आने वाले माह का कार्यक्रम निर्धारित करें जो बालिका शिक्षा व बालिका संवेदीकरण पर केन्द्रित हो। ज़िम्मेदारियां बाँट कर उस कार्यक्रम को क्रियान्वित करें।
- ♦ माह के अन्त में पुनः मिलने की तिथि निर्धारित करे, जिससे किये गये कार्य का मूल्यांकन किया जाये।

पंजीकरण :–

सुगमकर्त्ता उपस्थित प्रतिभागियों का नाम अभिलेख पर लिखेगा व उनसे हस्ताक्षर करायेगा।

प्रशिक्षण आवासीय है इसलिये सायं भी प्रतिभागियों का हस्ताक्षर अनिवार्य होगा।

विषयः प्रतिभागियों का परिचय

उद्‌देश्यः प्रतिभागियों में मित्रतापूर्ण व्यवहार स्थापित करना तथा कार्यशाला की शुरूआत में ही स्वस्थ परम्परा का निर्माण करना।

परिचय विधियाँ

यहां पर भिन्न–भिन्न प्रकार की परिचय विधियाँ दी जा रही हैं। संदर्भदाता इनमें से कोई भी परिचय विधि अपना सकते हैं।

1. प्रतिभागियों को नाम के साथ अपने नाम के शुरू के अक्षर से फल का नाम बताने को कहें जैसे – मुक्ता – मक्का

अभिनव – आम

सीमा – सेब

२. प्रतिभागियों को अपने नाम के साथ पहले वाले सभी प्रतिभागियों का नाम बताने को कहे। जैसे – रमेश, विवेक, रश्मी, पूजा, प्रतिभा, नरेन्द्र, निशा, सुरेश........बैठे हैं तो रमेश सिर्फ अपना नाम बतायेगा, विवेक अपना नाम बताने से पहले रमेश नाम लेगा फिर विवेक कहेगा जैसे – रमेंश विवेक। फिर रश्मी अपनी बारी में रमेंश, विवेक, रश्मी नाम बताएगी। पूजा अपनी बारी में रमेंश, विवेक, रश्मी, पूजा बतायेगी।

यह परिचय प्रतिभागियों के बीच आपस में झिझक दूर करेगा, तथा उन्हें प्रशिक्षण खुलेमन से लेने के लिए तैयार करेगा।

३. सुगमकर्त्ता समूह के प्रतिभागियों के अनुसार दो–दो एक ही तरह की पर्चियां बनायेगा जैसे–

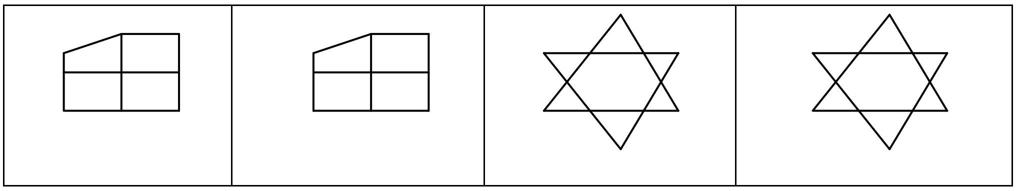

इन पर्चियों को एक साथ मिलाकर प्रतिभागियों से पर्चियां उठाने को कहेगा। इन पर्चियों के अनुरूप से दो लोगों का जोड़ा बनाकर, एक दूसरे का परिचय देना है।

४. यहां हम एक खेल के माध्यम से प्रतिभागियों का परिचय करवायेंगें। इस खेल को खेलने के लिए दो एक जैसी तस्वीर बनाये। इस प्रकार जितने प्रतिभागी है उनकी आधी संख्या के बराबर तस्वीरों की जोडी बनेगी जैसे ५० प्रतिभागियों पर २५ जोडी तस्वीरें।

प्रत्येक तस्वीरों को मोडकर बीच में डाल दें। प्रतिभागी एक–एक तस्वीर उठायेंगें तथा जिन दो प्रतिभागियों के पास एक जैसी तस्वीर होगी उनका जोडा बनेगा। यह एक जोडा पहले आपस में एक दूसरे का परिचय लेंगें तथा सभी के समक्ष अपने–अपने जोडीदार साथी का परिचय करायेंगें।

<u>आवश्यक उपकरण</u> २५ जोडी तस्वीरें।

परिचय के पश्चात सुगमकर्त्ता अभियान गीत समूह में प्रतिभागियों से करायेगा।

अभियान – गीत {जो बीच राह में बैठ गए}

जो बीच राह में बैठ गए, वे बैठे ही रह जाते हैं।

जो लगातार चलते रहते, वे निश्चय मंजिल पाते है।।

जो बीच राह में..........................

माना वह दूर किनारा है, फिर सागर ने ललकारा है।

तब बैठे रहना हाथ बॉध, वीरो को नही गंवारा हे।।

जो बीच राह में...........................

वे कायर है, जो हार गये, नर नाहर बाजी मार गए।

इन तूफानों से टकराकर, हिम्मतवाले उस पार गए।।

जो बीच राह में...........................

माना गहरा अधिंयारा है, पर हमने कब स्वीकारा है।

हम दीपक जलते रहते, हमसे फैला उजियारा है।।

जो बीच राह में...........................

कार्य विभाजन

सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों को 4 समितियों में विभाजित करेगा

शिक्षा समिति – इसके सदस्य प्रशिक्षण की गतिविधियों की प्रतिदिन आख्या लिखकर सुगमकर्त्ता को देगे।

व्यवस्था समिति – इसके सदस्य प्रशिक्षण में बैठने रहने इत्यादि की व्यवस्था करेगे।

भोजन समिति – यह प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को नाश्ते व भोजन में योगदान करेगा।

सफाई समिति – स्वच्छता समिति प्रशिक्षण कक्ष, भोजन कक्ष व प्रसाधन कक्ष की सफाई का ध्यान रखेगी।

परियोजना के अन्तर्गत हुए पूर्व शिक्षक प्रशिक्षणों पर चर्चा

इसके पूर्व प्रथम चक्र व द्वितीय चक्र शिक्षक प्रशिक्षण में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अध्यापकों के साथ चर्चा की जा चुकी है। इस बारे में आप जागरूक भी है। हमारे जनपद में बहुत से ऐसे गॉव है, जहॉ बालिका शिक्षा दर अभी भी बहुत कम है। इसलिए इन्ही गांवों में परिवर्तन लाने के लिए आदर्श संकुल की अवधारणा को अपनाया गया। हमारे इस न्याय पंचायत की भी स्थिति ज्यादा खराब होने के कारण हम सब मिलकर इसके कारण को ढूढ़े, और चर्चा कर कुछ कारगर उपाय निकालें।

प्रशिक्षण से अपेक्षाएँ

सुगमकर्त्ता प्रत्येक प्रतिभागियों को कार्ड वितरित करेगा और वे प्रशिक्षण लेने हेतु किस अपेक्षा से आये है पूछेगा।

अपेक्षा आने पर उसे बिंदूवार लिख कर सभी प्रतिभागियों को स्पष्ट करेगा। हो सकता है कि अपेक्षा सही न आये। ऐसी स्थिति में सुगमकर्त्ता निम्न अपेक्षाओं को स्पष्ट करेगा।

सम्भावित अपेक्षाएं निम्नवत हो सकती हैं–

१. जेण्डर के विषय में जानने

२. संवेदनशीलता का महत्व

३. जेण्डर व संवेदनशीलता में क्या संबंध

४. लिंग संवेदनशीलता में अध्यापक की भूमिका

५. लिंगभेद को कैसे दूर कर सकते है

६. अध्यापक कैसे सक्रिय भूमिका निभा सकता है ?

७. अध्यापक समाज को किस प्रकार प्रभावित करेगा।

८. कक्षा में अध्यापक कहॉ तक समानता रख सकता है ?

९. अध्यापक कैसे परम्पराओं को तोड़ सकता है ?

१०. अध्यापक अपना मूल्याकन कैसे करे।

११. बालिकाओ को किस प्रकार प्रोत्साहित करें।

१२. अध्यापक बालिकाओ के नामाकंन व ठहराव में कैसे वृद्धि करेगा।

विषयः– प्रतिभागियों का आत्मविश्लेषण

उद्देश्यः– प्रतिभागियों के अन्दर व्याप्त महिला–पुरूष के विभेद की मानसिकता का विश्लेषण करना।

प्रक्रियाः– इस अभ्यास कार्य हेतु आत्मविश्लेषण कार्ड समस्त प्रतिभागियों से भरवाकर फिर उनका विश्लेषण किया जायेगा।

पूर्व तैयारीः– जितने प्रतिभागी होंगें उतनी ही संख्या में प्रश्नावली प्रपत्र की छाया प्रति तैयार रखे।

समयः– ३० मिनट

प्रश्नावलीः १

१. नाम..

२. आप किसके पुत्र/पुत्री हैं...

३. पता...

प्रश्नावलीः २

अपने स्कूल के जीवन में अपने विद्यालय के वार्षिक दिवस, खेल, प्रतियोगिता, नाटक, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि के संबंध में 'याद करके लिखें'–

(अ) (१) दिवस/गतिविधि विवरण...

(२) आपकी भूमिका...

(३) मुख्य अतिथि...

(ब) (१) दिवस/गतिविधि विवरण...

(२) आपकी भूमिका...

(३) मुख्य अतिथि...

(स) (१) दिवस/गतिविधि विवरण...

(२) आपकी भूमिका...

(३) मुख्य अतिथि...

(द) (१) दिवस/गतिविधि विवरण...

(२) आपकी भूमिका...

(३) मुख्य अतिथि...

<u>प्रश्नावली का विश्लेषणः</u>–

प्रश्नावली भरवाने के उपरांत संदर्भदाता सभी प्रश्नावली एकत्र कर लें। प्रश्नावली का विश्लेषण तथा अगले साल का संचालन साथ–साथ चलेगा। प्रश्नावली विश्लेषण की विधि निम्न है–

(१) **<u>प्रश्नावली १ का विश्लेषण</u>ः—**

प्रथम प्रश्नावली में यह देखना है कि कितने लोंगों ने माता का नाम, कितने लोंगों ने पिता का नाम तथा कितने लोंगों ने दोनों का नाम अंकित किया है। पता में कितने लोंगों ने मॉ का नाम डाला है, यह भी देखें तथा निम्न कालॅम द्वारा विश्लेषण करें—

					पता		
	पिता	माता	दोनों		माता	पिता	दोनों
संख्या				संख्या			

<u>परिणाम</u>ः—उपरोक्त अभ्यास से निम्न परिणाम निकलेगा—

१. पिता का नाम लिखने वालों की संख्या अधिक है।

२. माता का नाम लिखने वालों की संख्या अधिक है।

३. दोनों का नाम लिखने वालों की संख्या अधिक है।

क्रमसंख्या एक प्रतिभागियों की लिंग भेदभाव से ग्रसित होने की मानसिकता को दर्शाता है और क्रमसंख्या एक में ही ज्यादा संख्या होने की संभावना रहती है और ऐसा इसलिये होता है क्योंकि हम लोग शुरू से ही <u>प्रत्येक</u> फार्म में अवयवों जहां कहीं भी मुखिया का नाम लिखने की जरूरत पडती है, अपने पिता का ही नाम देते रहे हैं। इसी प्रकार हमारा पता भी पिता के नाम से जाना जाता है।

(२) **<u>प्रश्नावली २ का विश्लेषण</u>ः—**

प्रश्नावली २ के विश्लेषण हेतु निम्न दो कॉलम बनायें—

(१) मुख्य अतिथि (२) आपकी भूमिका

(१) दिवस / गतिविधि का विवरण	पुरूष	नारी		पुरूष	नारी
			संख्या		

(३) <u>प्रश्नावली ३</u>

निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (√) या गलत (χ) का चिन्ह लगायें–

क्रम संख्या	वाक्य	सही	गलत
१	लडके–लडकियों को बराबर शिक्षा की आवश्यकता है।		
२	दोनो के लिये स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं चिकित्सा की समान व्यवस्था होनी चाहिये।		
३	दोनों को समान कर्त्तव्य व दायित्व का भार दिया जा सकता है।		
४	दोनो को बराबर स्वतन्त्रता देनी चाहिये।		
५	दोनों को खेलने के लिये बराबर समय देना चाहिये।		
६	दोनो ही सभी कार्य भली–भॉति सम्पन्न कर सकते हैं।		
७	दोनों ही हर प्रकार का व्यवसाय कर सकते हैं।		
८	दोनों में समान योग्यता एवं कार्यक्षमता है।		
९	घर के कार्यों को सभी सदस्यों को आपस में बॉट लेने चाहिये।		
१०	पारिवारिक सम्पत्ति में लडकियों का बराबर का हिस्सा होना चाहिये।		

(४) <u>प्रश्नावली ४</u>

आपके अनुसार निम्नलिखित में से कौन सी विशेषतायें महिला अथवा पुरूष से संबंधित हैं। विशेषताओं के सामने खाने में म० (महिला) अथवा प० (पुरूष) अंकित करें।

स्वनिर्भर		जिद्दी		महत्वाकांक्षी	
संकोची		तार्किक		सक्षम	
शान्त		कर्कश		शक्तिशाली	
व्यवहारिक		स्पष्टवादी		निर्णय लेने की क्षमता	

कल्पनाशीला		गम्भीर	
आक्रामक		अक्षम	
धैर्यवान		बाध्य	
परावलम्बी		नेता	
उन्मुक्त		आत्मविश्वासी	
भावुक		कोमल	
चंचल		सक्रिय	

कॉलम एक का विश्लेषणः–

कॉलम एक से हम यह निष्कर्ष निकाल सकेंगें कि विद्यालय के महत्वपूर्ण दिवसों, उत्सवों में मुख्य अतिथि के रूप में कितने पुरूषों ने प्रतिभाग किया तथा कितनी महिलाओं ने।

कॉलम २ का विश्लेषणः–

कॉलम २ से हम यह निष्कर्ष निकालेंगें कि हर एक उत्सवों में कितनी महिलाओं ने प्रतिभाग किया तथा कितने पुरूषों नें प्रतिभाग किया।

उपरोक्त दोनो बिंदुओं पर चर्चा कर निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं–

- मुख्य अतिथि के रूप में महिलाओं को भी आमंत्रित करना चाहिये।
- विद्यालय की मुख्य गतिविधियों में बालिकाओं की भी बराबर भागीदारी होनी चाहिये।

प्रश्नावली ३ का विश्लेषणः–

प्रश्नावली ३ में यदि सही का निशान लगा है तो ठीक है परन्तु जहां पर गलत का निशान लगा है उस वाक्य पर चर्चा करायें।

प्रश्नावली ४ का विश्लेषणः–

उपरोक्त विश्लेषण का यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश उत्तरदाता यह मानते हैं कि स्वनिर्भरता की विशेषता पुरूषों में होती है, महिलाओं में बहुत कम संख्या में। इसी प्रकार संकोची स्वभाव की महिलायें अधिक है पुरूष बहुत कम।

नोटः–

उपरोक्त गतिविधियों का विश्लेषण अगले सत्र की समाप्ति के पश्चात प्रतिभागियों के सामने रखा जाये।

प्रथम अभ्यास :–

सुगमकर्त्ता के लिए निर्देशः–

१. सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों को एक परिवार का चित्र अवलोकन करने के लिए देगें।

२. प्रतिभागियों को चार समूहों में बॉटा जायेगा, सबको एक –एक परिवार का चित्र देकर उस पर चर्चा करवायेगें। सत्र का समय बीस मिनट का होगा।

एक सुगमकर्त्ता अगले सत्र के संचालन की तैयारी करेगा, तथा दूसरा प्रथम अभ्यास कार्य का विश्लेषण करके अलग रखेगा।

अभ्यास किया :– मेरा परिवार {महिला पुरूष एहसास}

चित्र न0 01 – सुबह का दृश्य

चित्र न0 2 {दोपहर का दृश्य}

चित्र न0 3 {शाम का दृश्य}

चित्र न0 4 { शाम का दृश्य}

चित्र नं0 1 के संवंध में समूह 1 द्वारा व्यक्त विचार निम्नवत हो सकते हैं–

- महिला बच्चे को दूध पिला रही है।
- घर के सभी सदस्य एक साथ अलग– अलग कार्य कर रहे है।
- महिला के ऊपर कार्य का भार अधिक है।
- पुरूष जिस कार्य को महिला से कहते है, उस कार्य को खुद भी कर सकते है।

निष्कर्ष :–सुगमकर्त्ता द्वारा स्पष्ट किया जायेगा।

- निर्णय पुरूष करते है, महिला उस कार्य को लागू करती है।
- कार्यो के बीच असंतुलन की स्थिति परिलक्षित होती है।

चित्र नं0 2 के संबंध में समूह 2 द्वारा व्यक्त विचार :–

- लड़का विद्यालय में पढ रहा है।
- लड़की छोटे भाई–बहनों की देखभाल कर रही है।
- मॉ खेत में खाना लेकर जा रही है।

निष्कर्ष :–सुगमकर्त्ता द्वारा स्पष्ट किया जायेगा।

- महिला पुरूष, लड़का लड़की के कार्य विभाजन स्पष्ट परिलक्षित हो रहे है।
- पढ़ने की उम्र मे भी लड़की घर पर काम कर रही है।
- लड़की की पढ़ाई को महत्व नही दिया जा रहा है।

लिंग भेद के कारण व्यवहार में अन्तरः–

उपरोक्त अभ्यास कार्य के उपरांत प्रतिभागियों में यह समझ पैदा करने के लिये कि महिलाओं को कमतर क्यों समझा जा रहा है? इसके लिये निम्नवत बिंदुओं को पढवाकर चर्चा करवायें–

नारियों का संसार केवल घर तक ही सीमित क्यों?

नारियों को सुरक्षा प्रदान करने की इसी भावना से ही शायद हम उन्हें केवल घरेलू कार्य का हिस्सेदार समझते हैं। जैसेकि खाना बनाना। ये कार्य जहां तक घर की चाहरदीवारी तक सीमित है बहुत सरल है। अतः ये लडकियों के लिये ही रखा जाये। लेकिन जैसे ही ये काम घर के बाहर चला जाता है– चाय की दुकान, होटल या रेस्टोरेंट के लिये हो जाता है। लडकियों का काम रह जाता है केवल पानी देना, बर्तन साफ करना। जब तक कोई कार्य धनोपार्जन के लिये न हो, तब तक वो नारियों के हिस्से में ही रहता है, जब भी आर्थिक पक्ष आ जाता है तब वो पुरूषों का क्षेत्र हो जाता है। घर के अन्य कार्य– खेती बाडी से लेकर नौकरी, व्यवसाय पुरूषों के कार्य माने जाते हैं। इसके दो कारण हैं, पहला सुरक्षा, दूसरा सामर्थ्य।

क्या लडकियां बाहर के काम के लिये अनुपयुक्त हैं?

दूसरी तरफ से – देखा जाये, जब आवश्यकता हो, या परिवार के पुरूषों में किसी भी कारण से अक्षमता दिखाई दे, तब शहर या गांव की सभी स्तर की नारियां सभी कार्य की जिम्मेदारी दृढता के साथ पूरा करती हैं। वहॉ उसकी योग्यता, कार्यक्षमता, दैहिक बल–बुद्धि, प्रति उत्पन्न गीत आदि में वे स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठता का परिचय देती हैं। कृषक के घर में हल जोतने का काम, खेत के काम, व्यवसाय, दुकानदारी आदि सभी कार्यों को नारियॉ सरलतापूर्वक कर लेती हैं। इन कार्यों के बावजूद उनके पास गृहस्थी के दूसरे काम भी रहते हैं। इन सभी क्षेत्रों में सुरक्षा, दैहिक क्षमता आदि का प्रश्न ही नहीं उठता है। बाजार में सब्जी से लेकर मछली विक्रेताओं में ५०% से भी अधिक महिलायें होती हैं। ऐसे भी कुछ परिवार दिखायी देते हैं जहॉ पुरूष वर्ग सारा जीवन आलस्य में ही व्यतीत करता है। पूरे दिन गप्पबाजी करके तथा मित्रों के साथ समय बिताकर घर लौटते हैं। वे लोग बेफिक्र होकर नारियों के अर्जित धन पर जीवित रहते हैं। जिनके अर्जित पैसे से उनके नशे का खर्च चलता है, उनके ऊपर अत्याचार करने से भी वे नहीं चूकते हैं। स्त्री, कन्या पर मारपीट करना एक रोजमर्रा की घटना है किन्तु नारियों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। तथापि इन्हीं लडकियों को पढाने, पौष्टिक आहार देने आदि के मामले में पुरूष पूर्ण रूप से उदासीन रहते हैं। अतः सुरक्षा, शारीरिक अक्षमता, शालीनता आदि के बहाने नारियों को वंचित करना, यातना देना तथा दबा कर उनकी उनकी

मानसिक शक्ति को दुर्बल करने का एक कौशल मात्र है। जो कार्य पुरूषों के लिये चिन्हित एवं कठिन समझा जाता है, वो सभी कार्य महिलायें योग्यता से कर सकती हैं।

'लडकियों के काम' से क्या समझा जाता है?

हर परिवार में लडकियों को इस प्रकार बनाया जाता है, जिससे वे केवल कुछ विशेष क्षेत्रों मे दक्ष हो सकें। जैसे कि खाना–पकाना, घर सजाना, घर–द्वार साफ–सुथरा रखना, कपडे धोना, बर्तन मलना, बच्चों का लालन–पालन करना, रोगियों की सेवा–सुश्रुषा करना, सभी की सेवा करना आदि कार्यों को लडकियों के कार्य समझा जाता है। बाल्यावस्था से ही लडकियों को यह एहसास दिलाया जाता है कि लडकियों के यही कार्य हैं। वे लोग भी यही समझती हैं कि घरेलू कार्य पुरूषों के लिये नहीं हैं। पुरूषों को घर के बाहर और भी अनेक महत्वपूर्ण कार्य करने पडते हैं। उनके मन में यह भी धारणा बनी हुयी है कि लडकों का स्थान उन लोगों से ऊँचा है। लडके जिस प्रकार अपना जीवन निर्वाह करते हैं, लडकियों के लिये वैसे चलना शोभा नहीं देता। केवल यही नहीं लडके पुरूष होने के नाते जिन सुविधाओं का भोग करते हैं, लडकियों के लिये वो सभी सुविधाओं की मांग करना एक दुःसाहसिक कार्य है। प्रत्येक परिवार में मॉ लडकियों को यही शिक्षा देती आयी है। जिस कारण लडकियों की यही मानसिकता एक पीढी से से दूसरी पीढी तक चली आ रही है।

पुरूष प्रधान समाज ने ही नारी के कमजोर होने की भावना का विकास किया है। इससे दो लाभ हुए हैं– प्रतिष्ठा की लडाई में प्रतिद्वंदी केवल पुरूष ही हैं। दूसरी बात सुख एवं आराम के लिये एक दासी की व्यवस्था सुनिश्चित हुई। उन्नत समाज में भी अन्दर से यही मानसिकता कार्य कर रही है। इसका प्रकार भिन्न हो सकता है।

किस प्रकार नारी का आत्मविश्वास खो जाता है

एक लडकी की जिन्दगी की शुरूआत ही होती है अवज्ञा से। परिवार में लडके का जन्म होने पर बधाई गीत से स्वागत किया जाता है। दूसरी तरफ लडकी का जन्म होने पर परिवार में शोक की लहर छा जाती है।

थोडे बडे होने के बाद लडकियों को एहसास दिलाया जाता है कि उनकी स्वयं की कोई इच्छा–अनिच्छा नहीं हो सकती, कुछ मांग नहीं सकतीं, जो मिल जाये उसी में संतुष्ट रहें। सम्पन्न परिवारों में भी मछली, मीट, दूध, अंडे आदि पौष्टिक खाद्य पदार्थ पुरूषों को ही पहले दिया जाता है। अगर कुछ बचता है तो वह लडकियों के लिये। इस व्यवहार से लडकियां भी स्वयं को उपेक्षित समझने लगती है। जिस समय उसका भाई किताब लेकर स्कूल जाता है, दोस्तों के साथ खेल–कूद करता हैः उसी समय लडकियों को घर के कार्यों में हाथ बंटाना पडता है। छोटे भाई–बहनों की देख–रेख करनी होती है। घर की दहलीज पार करने का अधिकार उसका नहीं है। वो विद्यालय जायेगी कि नहीं, कितना पढेगी, किस उम्र में उसका विवाह होगा, उसके इन गंभीर विषयों को उनके अभिभावक ही तय करते हैं, वे ही उसका भविष्य निर्धारित करते हैं। उस स्थान पर उसकी इच्छा–अनिच्छा की कोई

कीमत नहीं होती है। उसका एक ही कर्त्तव्य है– अभिभावकों के आदेशों का पालन करना, जिसके परिणामस्वरूप वो धीरे–धीरे अपना आत्म–विश्वास एवं आत्म–सम्मान खो बैठती है। अपने जीवन के छोटे–छोटे निर्णय लेने की क्षमता भी नहीं रहती है। अपने मन की बात खुलकर कहने का साहस भी नहीं रहता है। यही मानसिक पराधीनता जो कि बाद में मानसिक विकृति के रूप में दिखायी पडती है उसी भाव को यह समाज नारी की विशेषता के रूप में मानता है। इससे स्वयं को मुक्त करने का साहस नारी में नहीं होता है। जो भी कोई बहुत कोशिश करता है उसे अवांछित दुःसाहस बताकर समाज दबा देता है। युगों–युगों से चली आ रही इस मानसिकता से उबरने की कोशिश करना ही प्रगति के पथ को प्रशस्त करेगा :–

कहानी चर्चाः–

शिक्षक वर्ग भी इसी समाज का हिस्सा है इसलिये अनजाने में वे भी अपने व्यवहार से ऐसे अनचाहे संदेश बालिकाओं तक पहुंचाते हैं जो उन्हें बालक से अलग का एहसास दिलाते हैं। यह अनचाहा संदेश या व्यवहार किस प्रकार दिया जाता है। यह निम्नवत कहानियों से स्पष्ट होगा।

सुगमकर्त्ता के लिएः–

सुगमकर्त्ता निम्नवत तीनों कहानियों को एक–एक करके पढवायेगें तथा उस पर चर्चा करायें–

कहानी नं0 2

सोनी का क्या दोष ?

सोनी कक्षा 4 में प्राथमिक विद्यालय कटैंना हर्षा की छात्रा थी। सोनी जिज्ञासु व उच्च मेधा की छात्रा रही, विद्यालय में जो भी पढ़ाते वह उसे ध्यान से सुनती, समझती व दोहराती। गणित में भाग पढ़ाने के बाद भटनागर साहब ने कहा हल करो, और कक्षा से बाहर चले गये। सभी बच्चे आपस में बाते करने लगे, और एक दूसरे की नकल भी करने लगे।

कक्षा में आने पर जब मास्टर साहब ने पूछा कौन–कौन कर सकता है श्यामपट्ट पर, तो हमेंशा की तरह सोनी ने उत्सुकता से हाथ उठाया और कहा 'हम बताए मास्टर साहब ? हम बताए? परन्तु मास्टर साहब ने कोई ध्यान नहीं दिया। सोनी ने पुनः अपनी ओर मास्टर का ध्यान आकर्षित करते हुये कहा हमसे पूछिए न मास्टर साहब, परन्तु भटनागर साहब ने क्रोध भरी निगाह से घूरते हुए उसे देखा और चुप बैठने को कहा। और अचानक हज़ारों दीप उस के मस्तिष्क में जलकर अचानक बुझ गये।

वहीं भटनागर मास्टर जी ने विनय एवं राजीव से पूछा व हल करने को कहा। 'भाग' न कर पाने पर गोल्डी, दीपू, नीलू को मारा और घर से करके लाने को कहा। सोनी से मास्टर साहब क्यो कुछ नहीं बोले व पूछा ? सोनी स्कूल से घर तक जाते हुए इसी पर सोचती रही।

दूसरे दिन भी मास्टर साहब ने सोनी के सवाल हल कर लेने पर न तो सोनी को प्रोत्साहित किया न पीठ थपथपायी न ही कक्षा में श्यामपट्ट पर करके दिखाने को कहा।

ऐसा व्यवहार मास्टर साहब हमेंशा ही सोनी के साथ करते। सोनी के कुछ भी पूछने पर कहते गणित और सवाल लड़कियों के बस के नहीं? यह बात सोनी को अन्दर तक भेद देती। परन्तु मास्टर साहब ने सोनी की मनोदशा पर कभी ध्यान नहीं दिया।

सोनी मन ही मन मास्टर साहब के व्यवहार से दुखी रहती, घर पर अपने माता–पिता से इस व्यवहार की चर्चा करती और पूछती पिता जी मास्टर साहब मेंरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते है मुझसे क्यो नहीं पूछते ? पिता भी कोई जवाब न देते। धीरे धीरे सोनी में हीन भावना आती गई और उसका आत्म विश्वास ही खो गया। उसे लगता कि शायद वह हल सही नहीं कर सकती। शायद उसे मास्टर साहब इस लायक नहीं समझते कि वह अपने साथियों को सवाल हल करना सिखा सके। निराश सोनी पढ़ाई के प्रति निरूत्साहित होती गई। सोनी को विद्यालय छोड़े लगभग 8 माह बीत चुके है। लोगो के समझाने पर भी अब वह विद्यालय जाने को तैयार नहीं, बस एक ही प्रश्न सबसे करती है – मास्टर साहब हमसे कुछ पूछते क्यों नही? क्यों डॉटते है हमें? आज तक किसी ने भी सोनी को स्पष्ट जवाब नहीं दिया।

विचारणीय बिन्दू –

सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों से करवायेगा।

- मास्टर साहब सोनी से कुछ क्यों नहीं पूछते ?
- सोनी का क्या दोष था ?
- सोनी के विद्यालय छोड़ने के पीछे क्या कारण हैं ?
- क्या सोनी के प्रति मास्टर जी की व्यवहार टीक था?
- सोनी और सोनी जैसी अन्य लड़कियाँ विद्यालय न छोडें इस के लिए आप क्या कर सकते हैं?

कहानी नं0 3.

अंशु की कहानी

मास्टर साहब के लूली कह कर पुकारने से अंशु दुखी होकर विद्यालय से लौट आयी थी। कारण आज हेड मास्टर साहब के लिये जब मास्टर साहब ने पानी मंगाया तो वह अंशु के हाथ से गिर गया। मास्टर साहब ने जोरदार आवाज में उसे 'अपंग' 'अपाहिज' व 'लूली कहीं की' कह कर डांटा, कि एक गिलास पानी नहीं लाकर पिला सकती। सभी साथी बच्चे जोर से हॅस पड़े।

अंशु का कोमल दिल सहम गया उसे अपनी विकलांगता का एहसास मास्टर साहब के जोरदार शब्दों नें करा दिया है।

कक्षा तीन में नियमित जाने वाली अंशु अब दुखी रहती व कभी–कभी ही स्कूल जाती। कुंठित अंशू को अब मास्टर साहब द्वारा पढ़ाये जाने वाला पाठ समझ में नहीं आता और न ही किसी बच्चे से बातें करती वह हर समय अपने विकलांग होने के कारण क्षुब्ध थी। धीरे धीरे उसने स्कूल जाना बन्द कर दिया। स्कूल छोड़े उसे 6 माह बीत गये।

अभी भी जब उसके विद्यालय के बच्चे बस्ता लेकर स्कूल जाते है तो उसका मन भी मचलता है, उसके पैरों में भी हलचल होती है विद्यालय जाने के लिये, लेकिन मास्टर साहब का व्यंग उसकी कल्पना को चकनाचूर कर देता है। और अंशु अपने घर की चहारदीवारी से सिमट जाती है।

विचारणीय बिन्दू :–

सुगमकर्ता प्रतिभागियों से करवायेगा।

- क्या विद्यालय में पड़ने वाली डांट के लिए अंशु ही जिम्मेदार है?
- अंशु के शालात्याग के लिए कौन दोषी है?
- क्या अंशु का शालात्याग रोका जा सकता था?
- क्या अध्यापक के व्यवहार में परिवर्तन होना चाहिये?

अध्यापक स्वयं तथा साथी बच्चों के द्वारा अंशू जैसे बच्चों के लिए क्या कर सकता है?

<u>**शिक्षक क्या कर सकते हैं–**</u>

(क) प्राथमिक स्कूल में कक्षा कक्ष में छात्र / छात्राओं को अलग–अलग न बैठायें।

(ख) प्रत्येक कक्षा में २ मॉनीटर नियुक्त करें। एक लडका और एक लडकी।

(ग) खेलते समय लडके व लडकियों को मिलाकर ग्रुप (दल) बनायें।

(घ) उनके जीवन के सबसे नजदीकी विषयों को लेकर छात्र व छात्रा दोनों को ही प्रोत्साहित करें। दोनों को ही जोर–जोर से पढने या दोहराने के लिये उत्साहित करें।

(ड.) संकोची छात्र व छात्राओं से प्रत्यक्ष रूप से प्रश्न करने का प्रयत्न करें।

(च) भूमिका परिवर्तन का प्रयास करें ताकि सामाजिक लिंग भेद व सामाजिक परिधि में चल रहे कार्य (जो कि विद्यालय में प्रवेश करने से पहले ही बच्चे आत्मसात कर लेते हैं) को समाप्त कर दिया जाये। घरेलू कार्यों से लडकियों को दूर रखें जैसे साज सज्जा व सफाई के कार्य एवं देखें कि लडके व लडकियां एक साथ सभी कार्य कर सकते हैं।

(छ) प्रत्यक्षतः लडकियों के प्रति विशेष प्रयत्नशील या पक्षपाती मनोभावों से दूर रहें, क्योंकि इससे लडकों में वितृष्णा का भाव व लडकियों में परावलम्बन की भावना जागृत हो सकती है।

(ज) मर्यादा हानि का विचार करने से दूर रहें, जैसे– अरे लडकियों की तरह क्यों रो रहे हो? अथवा अधिक खेलने वाली या चंचल लडकियों को लडकों जैसा कहा जाता है।

(झ) छात्राओं का विकास इस प्रकार करें कि उनमें नेतृत्व करने की भावना का व निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो। लडकों की भॉति ही, दोनों पक्ष एक दूसरे को परस्पर समान भाव से ग्रहण कर सकें।

(अ) <u>पढने का अभ्यास</u>

कक्षा में कुछ ऐसी कहानियॅा या वास्तविक घटना पढ कर सुनायी जा सकती हैं जहां हम लोग साहसी, परिश्रमी, बुद्धिमती एवं आत्मविश्वासी लडकियों की झलक पाते हैं।

<u>जेण्डर क्या है?</u>

पिछले सत्र में हमने चर्चा किया है कि महिला–पुरूष व बालक–बालिका में समाज द्वारा दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता है इसे ही लिंग भेद या जेण्डर कहते हैं। वास्तव में लिंग भेद या जेण्डर है क्या। आइये इस सत्र में हम चर्चा करते हैं–

<u>नारी व पुरूष में अंतर कहॉ?</u>

एक बात भली–भॉति समझनी पडेगी कि लिंग भेद व ज्ञान, नारी व पुरूष की विशेषता समान नहीं है। प्राकृतिक कारण से , दैहिक रूप में एवं प्रजनन क्रिया में नारी व पुरूष की भूमिका भिन्न है। प्राकृतिक नियम से ही यह सम्भव होता है। यह विशेषता केवल मनुष्यों तक

ही सीमित नहीं है। वरन् इस मामले में मनुष्य व प्रकृति के अन्य जीवों के काम में कोई विशेष अंतर नहीं है।

केवल नारी ही संतान को जन्म दे सकती है और स्तनपान करा पाती है। यह दोनों कार्य प्रकृति प्रदत्त हैं। दैहिक विशेषता के कारण ही पुरूष के लिये यह संभव नहीं है। किन्तु शिशु को खिलाने, सुलाने या उसके लालन–पालन आदि में ऐसा और काम नहीं है जो कि दैहिक गठन के कारण पुरूषों के लिये असंभव है। लेकिन साधारणतया हमारे सामाजिक दृष्टिकोण से यह सब काम ' लडकियों के काम ' माने जाते हैं।

<u>' नारित्व ' व ' पुरूषत्व ' की विशेषता से क्या समझते हैं?</u>

घर के कामों में सहायता करना पुरूषों के लिये असम्मानजनक समझा जाता है, क्योंकि उनके अनुसार यह सब कार्य महिलाओं के हैं। हम सभी इस गलत धारणा के शिकार हैं कि पुरूषों के कार्य काज धनोपार्जन व परिवार का पालन है, उनका कार्यक्षेत्र घर के बाहर है, घर के अंदर नहीं। नारी व पुरूष की विशेषता तथा कार्य संबंधी यह धारणायें समाज के द्वारा ही बनायी गयी हैं।

घर में, बाहर, स्कूल के कक्ष में या खेल के मैदान में हम लोग देखते हैं कि लडकियों व लडकों के व्यवहार में काफी अंतर है। लडके उच्च स्वर में बात करते हैं, दौड भाग करते है, चिल्लाते हैं, दूसरी तरफ लडकियां साधारणतया खामोश, सिकुडी–सिमटी हुयी, शर्मीली तथा डरपोक होती हैं। ऐसा क्यों होता है? हम लोग ऐसा मानते हैं कि लडके–लडकियां इसी प्रकार का स्वभाव लेकर पैदा हुये हैं। लेकिन विचार करने पर ज्ञात होता होगा कि हम लोगों की यह धारणा गलत है।

समाज में यही धारणा है कि लडकियां होनी चाहियें–शर्मीली, नम्र, संकोची, कोमल तथा घर के कार्य में दक्ष । यही लडकियों के गुण समझे जाते हैं। दूसरी ओर लडकों के गुण से हम लोग समझते हैं–कठोर, साहसी, प्रतिवादी, हिंसात्मक, जो बाह्य समाज में लडाई में सफल हो। लेकिन दुनिया के विभिन्न प्रान्तों में, विभिन्न समाज में इन महिलाओं व पुरूषों के कार्यों की संज्ञा भिन्न–भिन्न है। अफ्रीका के किसी एक उपजाति में महिलायें ही उग्र, कठोर तथा आक्रामक हैं, दूसरी ओर पुरूष कोमल व संवेदनशील है। भारतवर्ष के पूर्वोत्तर में मेघालय उपजाति में लडकियां ही सम्पत्ति की हकदार होती हैं। फलस्वरूप देखा जाता है कि महिलायें पुरूषों से अधिक आत्म–विश्वासी हैं। हमारे देश में, गॉव या शहर में प्रायः यह देखा जाता है कि महिलायें ईंट या पत्थर जैसी भारी वस्तुयें सिर पर ढो कर सडक निर्माण के लिये ले जाती हैं। इस अवस्था में उनकी शारीरिक सक्षमता के बारे में कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। इससे क्या यह स्पष्ट नहीं होता है कि नारी व पुरूष की प्राकृतिक विशेषता पर कृत्रिम रूप से कुछ विधि–निषेध थोप कर, यह नारी या पुरूष की विशेषता बनायी गयी?

ये गुण जो कि स्वाभाविक रूप से नहीं आये हैं बल्कि मनुष्यों द्वारा कृत्रिम रूप से सृजित किये गये हैं, इसी सत्य को आधार मानने से ही समझ में आयेगा कि नारी–पुरूष के

मध्य भेद–भाव की जड़ कहाँ है। प्राचीन युग से ही यह पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था की विषमता होने के कारण नारी जाति को अनिवार्य रूप से द्वितीय श्रेणी का अधिकारी माना गया है। लेकिन महिलायें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक नहीं है। साधारणतया वे कोई प्रश्न नहीं करती हैं। माता–पिता भी लडकों की सुख–सुविधाओं के प्रति अधिक ध्यान देते हैं, लडकियां भी उसे स्वाभाविक मानकर स्वीकार कर लेती हैं। धीरे–धीरे लडकियों की वंचना (ठगना) गहरी से बहुत गहरी होती जा रही है। युगों–युगों से इसी प्रकार रहते–रहते इसी को स्वाभाविक मान कर उसे मानते आई है लेकिन यह स्वाभाविक न होने के कारण इसमें परिवर्तन लाना आवश्यक है एवं केवल इसी परिवर्तन के माध्यम से ही लडकियों की दशा में परिवर्तन सम्भव है।

जेण्डर क्या है, क्या नहीं

जेण्डर क्या नही है–

- यह महिला के लिये दूसरा शब्द नहीं है।
- यह लिंग का पर्याय नहीं है।
- जेण्डर पुरुषों और समाज से परे केवल महिलाओं की स्थिति पर बात नहीं करता।
- जेण्डर महिलाओं की समस्याओं पर बात करने के लिये प्रतीक शब्द नहीं है।

जेण्डर क्या है ?

- महिलाओं व पुरुषों की शारीरिक संरचना से परे उन्हें एक सामाजिक व्यक्ति के रुप में समझने का आधार है।
- यह महिलाओं व पुरुषों के बीच सामाजिक संबंधों की व्यवस्था की ओर इंगित करता है।
- जेण्डर आधारित सम्बन्ध समाज में महिला व पुरुष की भूमिकाओं और दायित्व के इर्ग–गिर्द बनते व मजबूत होते हैं।

यह सम्बन्ध हर समुदाय में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में समझें व अभिव्यक्त किये जाते हैं।

कैसे किया जा सकता है ?

समता और असमता :–

इसके अर्न्तगत बराबरी से एक जैसा नहीं बल्कि समभाव/ऐसे महिला व पुरुष जिनका समान महत्व हो।

- एक सिक्के के दो पहलू
- एक गाड़ी के दो पहिये
- **सबलीकरण :–**

  इसके अन्तर्गत समाज में परम्परागत रुप से चली आ रही अन्यायपूर्ण स्थितियों का तर्क की दृष्टि से विरोध करने व निर्णय लेने की क्षमता या सामर्थ्य।

  - निर्णय
  - कार्य करने की संभावना
  - क्षमता

  } सबलीकरण

  - साहस

अन्याय से बचना हो तो

अन्याय से बचना हो तो कर लेना पढ़ाई
शोषण से न पिसना हो तो कर लेना पढ़ाई
नुकसान से बचना हो तो कर लेना पढ़ाई
अपमान से बचना हो तो कर लेना पढ़ाई।

बीमारी भगानी हो तो कर लेना पढ़ाई
सेहत जो बनानी हो तो कर लेना पढ़ाई
इज्जत को बचाना हो तो कर लेना पढ़ाई
ओ भाई पढ़ाई, ओ बहना पढ़ाई।

कर लोगे पढ़ाई तो बन जायें सारे काम
अपना लिखोगे नाम उनका पढ़ोगे नाम
फिर जिन्दगी में कोई न अपमान कर सके
एक बार की मेहनत है तो उम्र का आराम।

सत्र समाप्त

द्वितीय दिवस – प्रथम सत्र

अभियान गीत – यहाँ का मौसम

धीरे–धीरे यहाँ का, मौसम बदलने लगा है।
वातावरण सो रहा था, अब आँख मलने लगा है।

पिछले सफर की न पूछो,
टूटा हुआ एक रथ था,
जो रुक गया था कहीं पर,
अब साथ चलने लगा है।
धीरे–घीरे यहाँ....................

हमको पता भी नहीं था,
वो आग ठंडी पड़ी है।
उस आग में आज पानी,
सहसा उबलने लगा है
धीरे–घीरे यहाँ....................

ये घोषणा हो चुकी है,
मेला लगेगा यहाँ पर।
हर आदमी घर जाकर,
कपड़े बदलने लगा है।
धीरे–घीरे यहाँ....................

जो आदमी सो चुके थे,
मौजूद है इस सभा में,
हर सच अब कल्पना से,
आगे निकलने लगा है।
धीरे–घीरे यहाँ....................

विषयः विद्यालय में जेण्डर गैप

सुगम कर्ता के लिये निर्देश :–

1. सुगम कर्ता प्रतिभागियों को हरदोई जनपद का एक शैक्षिक आकड़ा विश्लेषण के लिये देगा और उन्हें विश्लेषित करने के लिये कहेगा।
2. सुगम कर्ता द्वारा इस आकड़े विश्लेषण का दिया जाना, इस बात पर जोर देने के लिये होगा कि उनके जनपद में भी अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति, बाहुल्य क्षेत्र की क्या स्थिति है।

ब्लाक – संडीला विषय – **शत प्रतिशत नामांकन**

जिला – हरदोई

6-11 वर्ष की कुल आबादी / विद्यालय जाने वाले बच्चे

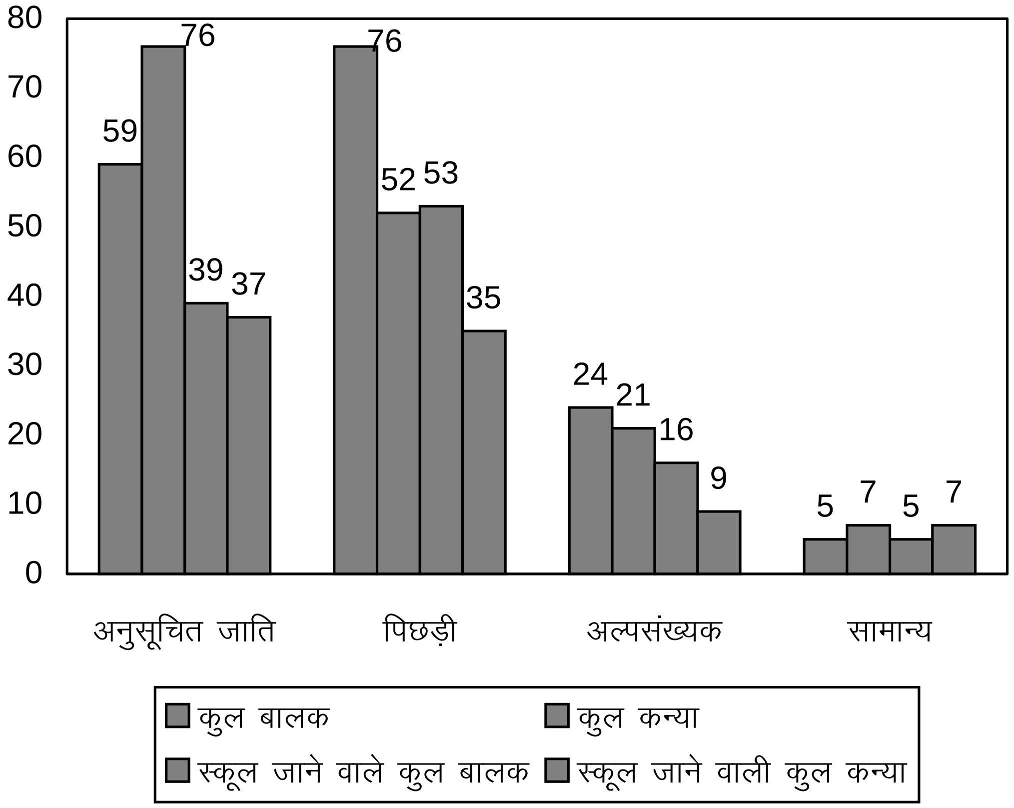

चर्चा बिन्दु

बालिका – बालिका नामांकन में अन्तर निम्न कारणों से है

लड़कियों को बराबर अधिकार निश्चित कराने के लिये लड़कों के साथ उन्हें बराबर के अवसर प्राप्त होने चाहिये। बहुत सी लड़कियां विद्यालय में दाखिला नहीं ले पाती हैं, व अनेक लड़कियां बीच में ही पढ़ाई छोड देती हैं। इन सब के कारण हैं–

- लड़कियों को घरेलू कार्य करने पडते हैं।
- छोटे भाई बहनों की देखभाल करनी पडती है।
- उनका अल्पायु में विवाह हो जाता है।
- विभिन्न व्यवसाय में लगे माता पिता के कार्य में सहायता करनी पडती है।

(गाँव में छोटी लड़कियाँ घर पर ही बैठकर बीडी बनाती है, कीमती पत्थर तराशती हैं, चूड़ी बनाती है, कपड़े सिलती है, कढ़ाई करती हैं, रुई और मूँगफली के छिलके छुडाती हैं, गल्ला सफाई व मिर्च पीसने जैसे बहुत से कार्य करती हैं। लेकिन चूंकि ये कार्य वे किसी खेत, खलिहान या कारखाने में जाकर नहीं करती, इसीलिये इन कार्यों का कोई आर्थिक महत्व नहीं रहता है।)

- माता–पिता शिक्षा का व्यय–भार उठाने में असमर्थ होते हैं अथवा लडकी को शिक्षित करना आवश्यक नहीं समझते।
- विभिन्न सामाजिक प्रतिबन्ध एवं समाज व परिवार में कन्याओं के प्रति भेदभाव पूर्ण आचरण। विद्यालय में पठन–पाठन व अन्य कार्यों में किस प्रकार लडकों व लडकियों में समता ला सकें, उन बिंदुओं पर सोच–विचार कर हम लोगों को यथा आवश्यक व्यवस्था करनी पडेगी।

तालिका नं0 2

क्र.सं.	शीर्षक	साक्षरता महिला	दर पुरुष	औसत बच्चे प्रति महिला	1000 जनसंख्या पर जन्म	नवजात शिशु की मृत्यु (1000 जन्म पर)	लिंग अनुपात महि0 का (प्रति 100 पुरुष पर)
1	भारत	39.4	63.9	4.00	30	91	93
2	उ0 प्र0	26.0	55.3	5.50	37	118	88
3	केरल	86.9	94.5	2.20	20	22	104

स्रोत : UPDPEP-II, राज्य योजना; जून 1997

उपरोक्त तालिका को देखने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि केरल राज्य की महिला साक्षरता दर जहाँ 86.9% है, वहाँ उत्तर प्रदेश की मात्र 26% ही है। ठीक इसी प्रकार नवजात शिशु मृत्युदर जहाँ केरल में केवल 22 है, वहीं उत्तर प्रदेश में 118 है। यदि लिंग अनुपात में देखा जाय, तो भी केरल में जहाँ 100 पुरुषों पर 104 महिलायें हैं। वहाँ उत्तर प्रदेश में 100 पुरुषों पर 88 महिलायें ही हैं। जिससे स्वतः स्पष्ट होता हे कि साक्षरता ही एक मात्र ऐसा कारण है, जिससे समस्त तथ्य प्रभावित होते हैं।

क्या आप जानते हैं कि !

⇒ 1991 में प्रति एक हजार पुरूषों के मुकाबले 927 महिलाएं हैं, जबकि उत्तरप्रदेश में 879 महिलाएं केवल और अपने ही देश केरल राज्य में 1036 महिलाएं क्यों ?

⇒ पैदा होने वाले बच्चे का लिंग निर्धारण पिता द्वारा होता है, न कि माँ के द्वारा।

⇒ पुरूषों की तुलना में अधिकतर महिलाओं की मृत्यु जन्म के समय से लेकर 29 वर्ष की आयु के बीच में हो जाती है।

⇒ लड़कों की तुलना में लड़कियों का स्कूल में दाखिला कम कराया जाता है। स्कूल में कम भेजा जाता है, और उनकी पढ़ाई अधूरी ही छुड़ा दी जाती है।

⇒ तुलनात्मक रूप से आज भी (1997-99) बालिकाएं 46-54% शालात्याग करती हैं। (स्त्रोत– नियोजन अनुश्रवण और सांख्यिकीय अनुभाग MHRD (GGOI)

⇒ 1991-92 में उत्तरप्रदेश में प्राथमिक स्कूलों में सकल नामांकन अनुपात जहाँ बालकों का 95% था, वही बालिकाओं का सकल नामांकन अनुपात 65% है। दोनों का मिलाकर 71% है।

⇒ (भ्रूण परीक्षण) के बाद कराये गये 8000 गर्भपातों का बम्बई में अध्ययन किया गया, जिसकी रिपोर्ट के अनुसार 7999 भ्रूण मादा शिशु के थे।

⇒ कन्या शिशु को अक्सर कम और थोड़ी अवधि के लिए स्तनपान कराया जाता है।

⇒ लड़कों को लड़कियों से पहले और अच्छा भोजन कराया जाता है।

⇒ लड़कियाँ घर के कार्य–फर्श साफ करने, कपड़े–धोने, पानी और ईधन लकड़ी लाने तथा छोटे भाई–बहनों को संभालने में 30% तक अपना सहयोग देती हैं।

⇒ अस्पताल के आँकड़ों से पता चलता है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को इलाज के लिए अस्पताल में कम लाया जाता है।

सुगमकर्ता "क्या आप जानते हैं ?" के अन्तर्गत प्रतिभागियों को निम्नलिखित आकड़ों की जानकारी देगा तथा विचार विमर्श करेगा–

उत्तर प्रदेश एवं भारत की तुलनात्मक साक्षरता दर (वर्ष 1951 से 1991 तक)

शीर्षक	**1951**	**1961**	**1971**	**1981**	**1991**
1	2	3	4	5	6
उत्तर प्रदेश					
पुरुष	17.4	27.3	31.5	38.9	55.35
महिला	3.4	7.0	10.6	14.4	26.02
योग	**10.9**	**17.6**	**21.7**	**27.4**	**41.71**
भारत					
पुरुष	24.9	34.4	39.5	46.7	63.85
महिला	7.9	12.9	18.5	24.9	39.42
योग	**16.6**	**24.0**	**29.4**	**36.2**	**52.11**

स्रोत : सांख्यिकी डायरी, उत्तर प्रदेश 1994

उपरोक्त आकड़ों को देखने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि 1951 में महिला साक्षरता दर 3.4% थी 1991 में बढ़कर 26.02% हो गई। यदि अनुपात में वृद्धि दर देखी जाय तो यह 7 गुना अनुपात में वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है। यदि यही भारत के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो महिला साक्षरता का प्रतिशत 1951 में 7.9% था, जो 1991 में बढ़कर 39.42% हो गया। यह मात्र 5 गुने से कुछ अधिक ही बढ़ा। यदि उत्तर प्रदेश और भारत के आकडों में तुलना की जाय तो भारत की तुलना में उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर में वृद्धि दिखायी पडती है।

जबकि वास्तविकता तो यह है कि 1951 में उत्तर प्रदेश में महिला साक्षरता की दर न्यून होने के कारण यह वृद्धि दृष्टिगोचर होती है जबकि यह वृद्धि अपने आप में कम ही है।

चाय अवकाश

अपने अन्दर झांकें

विषयः– कक्षा कक्ष में रोजमर्रा की घटनायें

उद्देश्यः– विद्यालय कक्षा–कक्ष में बच्चों व शिक्षक के बीच के व्यवहार का विश्लेषण करना।

माध्यमः– रोल प्ले

समयः– ३० मिनट

प्रक्रियाः— प्रतिभागियों को चार समूह में बांट दे तथा चारों समूहों को नीचे लिखी कक्षा की धनराशि का नाटक द्वारा प्रस्तुतीकरण करने को कहें। प्रत्येक समूह को नाटक तैयार करने हेतु पॉच मिनट का समय दें।

मुन्ना स्कूल क्यों नहीं आ रहा है?

घटना १:— कक्षा मे बच्चे बैठे हैं तथा शिक्षक हाजिरी लगा रहे हैं। उसी समय वे दो नामों मुन्ना तथा गुड्डी पर अटक जाते हैं। ये दोनों बच्चे लम्बे समय बाद स्कूल आयें। मास्टर जी लडके की अनुपस्थिति में ज्यादा रूचि दिखाते हैं तथा कारण जानने का प्रयास करते हैं तथा लडकी की अनुपस्थिति में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाते।

'यह लड़कियों के बस की बात नहीं है?'

घटना २:— गणित के शिक्षक कक्षा में जोड घटाना सिखा रहे हैं। सोनी कुछ पूछने के लिये हाथ उठाती है। शिक्षक उसे नजर—अंदाज कर देते हैं। सलमा फिर खडी हो जाती है और पूछती है— मास्टर जी फिर से समझा दीजिये। जवाब में शिक्षक कहते हैं— गणित इतना सरल नहीं है कि तुम्हें समझ में आ जाये। वैसे भी गणित जैसा विषय लड़कियों के लिये नही है।हमें परेशान मत करो। उसी के बाद एक सवाल बोर्ड पर लिखकर कहते हैं। रहमान उठकर इस सवाल को हल करो।

' उनका काम उनको करने दो'

घटना ३:— अगले दिन स्कूल में नवीन दिवस है। नये बच्चे स्कूल में आयेंगे। उनका आवाह्न करने के लिये हर प्रकार की तैयारी की गई है। स्कूल के अन्य शिक्षक—शिक्षकाओं के संग एक ही साथ बच्चे काम करते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि यह शरदीय उतार चढ़ाव का शोर उठ रहा है। लड़कियों को अल्पना, माला गूंथना, उद्बोधनी व नृत्य का कार्य सौंपा गया है। दूसरी ओर लड़कों को लेकर वे बाजार जायेंगे। इस दिन के लिये आवश्यक सामग्री खरीदने के लिये , एक लड़का — रमेश बहुत अच्छा चित्रांकन कर सकता है।

इसीलिये उनकी इच्छा है कि वह भी लड़कियों के साथ अल्पना बनाने के कार्य में जुट जाये। उनकी इच्छा सुनते ही कक्षा के अन्य छात्र बोल उठे कि अरे ! क्या तुम लड़की हो जो रंगोली बनाओगे? यह तो लड़कियों का काम है। प्रधानाध्यापक व अन्य शिक्षक भी थोडा हंस कर बोले कि उनका काम उनको करने दो, चलो तुम लोग अपना काम करो।

'क्या लड़कियों की तरह रोते हो?'

घटना ४:— रवि और शेखर तृतीय कक्षा में पढ़ते हैं। कक्षा में तब तक शिक्षक ने प्रवेश नहीं किया था। अचानक उन दोनों के बीच भयानक झगडा आरम्भ हो गया। तभी रवि अचानक चिल्लना रोना आरम्भ कर देता है। ठीक उसी समय शिक्षक ने प्रवेश करते ही जानना चाहा कि क्या हुआ है, इतना शोर क्यों ? रोते — रोते रवि ने उन्हें बहुत कुछ समझाना चाहा। यिाक्षक ने गुस्साकर कहा 'चुप रहो, लड़कियों की भांति मामूली बात पर मत रो'।

चर्चाः—

उपरोक्त रोल के प्रस्तुतीकरण पर प्रत्येक घटना पर समूह चर्चा कराये तथा चर्चा से निकले बिन्दुओं को चार्ट पर लिखते जायें।

सुगमकर्ता के लिये निर्देश :— सुगमकर्ता प्रतिभागियों से इस अभ्यास कार्य की सहायता से स्वमूल्यांकन के लिए प्रेरित करेगा तथा नीचे लिखित वाक्यों पर क्रमानुसार सभी प्रतिभागियों से विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए उन्हें सोचने के लिए उद्वेलित करने का प्रयास करे। समस्त चर्चा बिन्दुओं को चार्ट पर लिपिबद्ध करते जायें :—

(i) क्या मै बालक तथा बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियां नियोजित करता हूँ/करती हूँ ?

(ii) क्या मैं एक गतिविधि के तहत बालक तथा बालिकाओं के लिए अलग—अलग भूमिका नियोजित करता/करती हूँ ?

(iii) पढ़ाते समय तथा चर्चा के दौरान मेरे द्वारा प्रयोग किये जाने वाले ज्यादातर उदाहरणों में पुरूषों के नाम लिए जाते हैं ?

(iv)मेरे द्वारा लिखते समय लड़कियों की अपेक्षा लड़कों के नाम अधिक प्रयोग किये जाते हैं ?

(v) क्या मैं लड़कियों से अलग प्रकार के व्यवहार की उम्मीद करता/करती हूँ ?

(vi)क्या मैं लड़के तथा लड़कियों से अलग—अलग प्रकार का स्नेह दिखाता/दिखाती हूँ ?

(vii)क्या मैं लड़के तथा लड़कियों को अलग—अलग प्रकार के अनुशासन का निर्देश देता/देती हूँ ?

(viii)क्या मैं लड़के तथा लड़कियों को अलग—अलग तरीके से प्रोत्साहन देता/देती हूँ ?

(ix)क्या मैं प्रश्न पूछते समय बालक तथा बालिकाओं को समान मानता/मानती हूँ ?

(x) क्या मेरी प्रवृत्ति लड़के तथा लड़कियों के व्यवहार में लिंग आधारित भूमिका देने की है जैसे—

लड़के को ——————————————नहीं करना चाहिए

बड़े लड़के को————————————— नहीं करना चाहिए

अच्छी लड़कियों को——————————— नहीं करना चाहिए

(xi)क्या मैं लड़के तथा लड़कियों को एक प्रकार के कार्य/जिम्मेदारी देता/देती हूँ ?

(xii)क्या मैं लड़के तथा लड़कियों से प्रश्न करके उन्हें प्रोत्साहित करता/करती हूँ ?

उपरोक्त वाक्यों पर समस्त प्रतिभागी खुले मन से सच्चाई
सबके सामने रखे–ऐसा माहौल सुगमकर्ता को बनाना होगा।

प्रतिभागी अन्त में यह महसूस करें कि हम अनचाहें में
लड़कियों के साथ ऐसा व्यवहार करते थे जिससे उनका विकास
रूक जाता है। इस सब के अन्त में यह निश्चय किया जायें
कि अब हम भविष्य में अपना व्यवहार बदलेंगे।

सुगमकर्ता कुल हाँ व कुल न में आये अंको के आधार पर विश्लेषण करें। जैसे हाँ में 5 अंक व न में 3 अंक मिलने पर ही संवेदी अध्यापक होगा।

शिक्षा का करें प्रसार,
हर बालिका हो होनहार

विषयः कक्षा का वातावरण

सुगमकर्ता के लिए निर्देश

- सुगमकर्ता प्रतिभागियों को समूहों में बांट कर कक्षा के वातावरण के अवलोकन हेतु ले जायेगा।
- अवलोकन के समय प्रतिभागियों को मौन रहकर प्रेक्षण करने हेतु निर्देश देगा, बाद में प्रतिभागी अपने विवेक के अनुसार विचार विमर्श में प्रतिभाग करेंगें।
- सुगमकर्ता इस विषय को हां व न की प्रश्नोत्तरी द्वारा भी करा सकता है।

अभ्यास – प्रभावी कक्षा कार्य हेतु कक्षा का वातावरण

अवलोकन के बाद सुगतकर्ता प्रतिभागियों से निम्न प्रश्नों पर विचार करवायेगा–

- क्या कक्षा साफ थी, सम्पूर्ण छात्र कक्षा में बैठ सकते है? कक्षा के बाहर का स्थान प्रयोग में लाया जा रहा है या नहीं?
- कक्षा में अध्यापक द्वारा छात्रों की सहभागिता ली जा रही है? बालिका सहभागिता की स्थिति?
- क्या छात्रों द्वारा किये गये कार्य का प्रदर्शन व प्रोत्साहन किया गया?

- पाठ्य संबंधित सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है? सामग्री छात्रों के हाथ में छूने व प्रयोग हेतु दी जाती है या नहीं।
- कक्षा में बैठने की व्यवस्था क्रियापरक शिक्षण व सीखने के लिये अनुकूल है? क्या गतिविधियों में बालिकाओं की सहभागिता है ?
- कक्षा में बालक व बालिकाओं की क्षमता के आधार पर वर्गीकरण किया गया? गतिविधियों के आधार पर प्रोत्साहन दिया गया?
- क्या कक्षा में बालक बालिका में अंतः क्रिया को प्रोत्साहन दिया गया?
- समस्त बालक बालिका को क्रियात्मक पुस्तिका उपलब्ध है?
- कक्षा में बच्चों के श्यामपट्ट पर क्रियाए करायी जा रहीं है ?
- क्या सभी बालिकाओं पर निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध है ?
- क्या श्यामपट्ट पर लेखन क्रिया में बालिकाओं को अवसर दिया जा रहा है ?
- क्या अध्यापक द्वारा अपने कक्षा व्यवहार की समीक्षा प्रतिदिन की जाती है ?
- बच्चों की जिज्ञासा, उत्सुकता के अनुरूप पाठ् प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है? क्या बालिकाओं की जिज्ञासा पर अध्यापक उत्तर देता है ?
- पढ़ाने में किस प्रकार की शैली अपनायी जा रही है।
- क्या अध्यापक विषय की पुनरावृत्ति कराता है?
- क्या अध्यापक व्यक्तिगत कार्य को प्रोत्साहित करता है?
- बच्चों की तीव्र गति से सीखने व धीमी गति से सीखने पर अध्यापक की क्या प्रतिक्रिया होती है?
- क्या अध्यापक के सम्प्रेषण में स्थानीय भाषा का प्रयोग होता है?
- क्या कार्य व गतिविधि संबंधी मुद्दों पर बालक बालिका आपस में बातचीत करते है?
- क्या अध्यापक बच्चों को नाम से जानते है और नाम प्रयोग करते है, जिससे बच्चे अध्यापक को अपने नजदीक समझ कर व्यक्तिगत बातें बतातें हैं।
- क्या अध्यापक का व्यवहार बच्चों के साथ मृदु व मित्रवत है?

सुगमकर्ता के लिए निर्देश

उपरोक्त बिन्दुओं पर आये विचार को सूचीबद्ध करवाने के उपरान्त समीक्षा करवाकर निष्कर्ष रूप में अध्यापकों को उचित व्यवहार करने हेतु चर्चा करेगा तथा उन बिन्दुओं को बोर्ड पर लिखवायेगा जिससे कक्षा / विद्यालय में लिंगभेद दूर कर बालिकाओं को प्रोत्साहित करने वाला वातावरण पैदा किया जा सके।

शिक्षक की भूमिका–

सुगमकर्ता के लिए निर्देश

- सुगमकर्त्ता प्रभावी कक्षा के वातावरण को मुख्य बिंदु मान कर शिक्षक की भूमिका पर चर्चा करवायेगा।

  (क) समुदाय के साथ भूमिका

  (ख) विद्यालय के संबंध में भूमिका

- सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों को दो समूहों में बांट कर चर्चा करायेगें कि किन गुणों के अन्तर्गत बालिका शिक्षा में गुणात्मक सुधार हो।

क – समुदाय के साथ भूमिका

- **शिक्षक को समुदाय का पथप्रदर्शक होना चाहिये।**

पथप्रदर्शक होने पर शिक्षक समुदाय से लिंगभेद पर चर्चा करेगा और समुदाय को अभिप्रेरित कर उनके पारम्परिक विचारों में परिर्वतन लायेगा। पारम्परिक विचारों में जो बालिकाओं के अहित में होगा जैसे – बाल विवाह, दहेज, महिला के विरूद्ध हिंसा और महिला के साथ अप्रतिष्ठ व्यवहार की चर्चा कर इसे बदलने का निर्देश देगा। ताकि धर्म व विश्वास से बाहर आकर वे अपनी लड़कियों की न्यूनतम बुद्धिस्तर, योग्यता व क्षमता में वृद्धि कर सकें।

सुगमकर्ता उपरोक्त चर्चा के उपरान्त साथ ही निम्न बिन्दुओं पर अपने विचारों को ही समुदाय को स्पष्ट करेगा कि

- **बालक व बालिका दोनों की शिक्षा समानरूप से आवश्यक है।**

<u>अभिभावकों के साथ जिन–जिन विषयों पर चर्चा की जानी है:</u>

छात्राओं के माता व पिता कि साथ पृथक रूप से एवं संयुक्त रूप से इन विषयों पर आलोचना कीजियेः–

1. बालिका की शिक्षा के लिये वे क्या कर रहे हैं?
2. बालिका को शिक्षा का सुअवसर देना आवश्यक क्यों हैं?
3. बालिकाओं को अधिकतर घरेलू कार्यों में लगाया जाता है कि नहीं?
4. पढने के लिये बालिकाओं को घर पर पर्याप्त समय मिलता है कि नहीं?
5. यदि लडका घर पर पढने के लिये गृह शिक्षक की सुविधा पाता है तो वही सुविधा लड़की को भी मिलती है कि नहीं?

6. लड़के व लड़की दोनो के प्रति शिक्षा से लेकर हर क्षेत्र में एक ही प्रकार की सुविधा देनी चाहिए।

7. शिक्षा लड़कियों को कहॉ तक स्वावलंबी बनाती है?

8. शिक्षा किस प्रकार घर–परिवार में सुख–संवृद्धि की प्रतिष्ठा करती है।

9. उन्हें समझाने का प्रयत्न करें कि शिक्षा का अर्थ केवल एक नौकरी ही नहीं, शिक्षा का अर्थ है, उसकी स्वयं की वृत्ति में उत्कर्ष साधन की आवश्यकता केवल नौकरी पाने के लिये नहीं है वरन् शिक्षा रोजमर्रा के जीवन को बेहतर बनाती है।

10. विभिन्न क्षेत्रों में लड़कियों की सम–योग्यता के निदर्शन के विषय में उन्हें बतायें।

11. बाल–विवाह के, कुप्रभावों के विषय में उन्हें समझाये।

12. उन्हें समझायें कि दहेज प्रथा कानूनन दण्डनीय अपराध है।

13. लड़कियों के काम व आचार–आचरण जैसा कुछ अलग नहीं है, यह धारणा उन्हें स्पष्ट करनी चाहिये। केवल लडकियां ही क्यों खाना पकायेंगी, घर साफ करेगीं, कपडें धोयेंगी या अपने छोटे भाई–बहनों को देखेंगी। लडके अगर घरेलू कार्य में हिस्सा नहीं बटाते तो लडकियों को स्कूल में अधिक दबाव सहन करना पडेगा। अतः घरेलू कामों का बॅटवारा स्त्री–पुरूष के आधार पर नहीं बल्कि सदस्य, आयु व योग्यतानुसार होना चाहिये।

<u>विद्यालय में शिक्षक.शिक्षिकाओं का आचार.–आचरण</u>

विचार किया जाय –

1. पढाई के क्षेत्र में लड़कियों में यदि कोई कमी हो तो क्या हम लोग उसे दया दृष्टि से नहीं देखते ? क्यों ? किस मानसिकता के कारण ?

2. बार–बार समझाने के लिये क्या हम लोग लड़कियों के मामले में थोड़ी शिथिलता नहीं दिखाते हैं ? क्यों ? किस मानसिकता के कारण ?

3. लड़कों की पढाई यदि किसी कारण से बंद हो जाती है तो हम लोग उतावले हो जाते हैं। लेकिन लडकियों के मामले में क्या हम लोग उसी प्रकार चिंतित होते हैं?

4. मेधावी छात्र से भी अधिक मेधावी छात्रा को क्या हम लोग पृथक दृष्टि से देखते हैं?

5. प्रत्येक कक्षा में, प्रत्येक वर्ष, कितनी लड़कियां प्रथम दस छात्रों में आती हैं?

6. किसी भी कक्षा में, कितनी बार लडकियां प्रथम आयी हैं?

7. यदि हम लोगों के विद्यालय में लड़कियां सभी क्षेत्रों में लड़को को पीछे छोड़ देती हैं तो क्या हम लोग प्रसन्न होते हैं?

8. जो छात्र पढाई में कमजोर होते हैं, उनके सामने हम लोग अच्छी छात्राओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं?
9. पढाई व किसी भी कार्य में लडकियां आगे आती हैं तो हम लोग कहते हैं 'ये तुमसे नहीं होगा, – नवीन ! तुम आओ'। इस भावना ने हमारी चेतना को कितना जकड रखा है?

<u>कक्षा में पढाने के समय</u>

अब पढाने की ओर देखा जायेः–

1. पढाते समय हम लोग कितनी बार पुल्लिंग वाचक शब्द व उदाहरण अपने वाक्य में प्रयोग करते हैं?
2. किसी वीर गाथा में कितनी महिलाओं का जिक्र है?
3. नारी पुरूष दोनो ही मुसीबत में फंसे हुये हैं। इन्हें उबारने के लिये किसे प्राथमिकता दी जाये, नारी को या पुरूष को?
4. उदाहरण या व्याख्यान देते समय कितनी पुरुष प्रधानता रहती है? इस बारे में क्या हम लोग कभी सोचते हैं?
5. प्रश्नोत्तर के समय हम लोग किससे (बालक / बालिका) अधिक प्रश्न करते हैं?
6. क्या सही उत्तर देने पर छात्र या छात्रा को एक ही ढंग से प्रोत्साहित करते है?

<u>विषयों को पढाते समय ध्यान रखें–</u>

बच्चों से विभिन्न विषयों पर संवाद स्थापित करते समय अत्यधिक सजग रहने की आवश्यकता है।

इस सत्र में विभिन्न विषयों को किस प्रकार पढ़ायें इसका उदाहरण अत्यधिक सरल एवं विस्तृत तरीके से प्रस्तुत किया गया हैः–

<u>भाषा शिक्षण</u>

भूमिका

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है अर्थात भाषा के माध्यम से हम अपने विचार दूसरों तक संप्रेषित करते हैं। इसी प्रकार दूसरों के मौखिक एवं लिखित विचार भी भाषा के माध्यम से ग्रहण किये जाते हैं।

भाषा के निम्नलिखित चार मुख्य कौशल हैं :–

१. सुनना
२. बोलना
३. पढ़ना
४. लिखना

ये चारों कौशल एक दूसरे से संबंद्ध हैं। भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य इन चारों कौशलों में दक्षता प्राप्त कराना है। भाषा अन्य विषयों के शिक्षण का भी माध्यम है।

उद्देश्य

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

(क) बालको बालिकाओं को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर–

- सामान्य गति से बोली गई (उच्चरित) भाषा को ध्यानपूर्वक सुनकर भली–भांति समझ सकें।
- भाषा को ठीक–ठीक बोल सकें।
- उचित प्रवाह के साथ सस्वर वाचन कर सकें।
- स्पष्ट व सुंदर लिख सकें।

(ख) बालको बालिकाओं में ऐसी क्षमता उत्पन्न करना कि वे–

- उचित गति से पाठ्य सामग्री का मौन वाचन कर सकें, उसे ठीक–ठाक समझ कर ग्रहण कर सकें तथा उनसे इस संबंध में जो–जो प्रश्न पूछे जाएं, उन प्रश्नों का जैसा चाहिए, वैसा उत्तर दे सकें।

गणित शिक्षण

भूमिका

प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि बच्चे शीघ्र तथा सही रूप से अंकीय तथा स्थानिक समस्याओं को हल कर सकें, जिनका उन्हें घर, समुदाय तथा विद्यालय में सामना करना पड़ता है। प्राथमिक स्तर पर गणित का उद्देश्य बच्चों में अपने भौतिक परिवेश से प्राप्त अनुभवों को गणित के विकास में सहायक बनाना है। इसके लिये सरल से कठोर, स्थूल से सूक्ष्म तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर ले जाकर उनकी समझ को विकसित किया जा सकता है। इस विधा के द्वारा वास्तव में हम गणित की विभिन्न क्षमताओं का विकास कर सकते हैं। गणित के द्वारा हम शीघ्र तथा सही रूप से गणना करने की योग्यता का विकास कर सकते हैं। गणित की शैली में भौतिक कथनों का चिन्हों में प्रयोग करते हैं तथा उन्हें रेखाचित्रों के रूप में रूपांतरित कर सकते हैं। यही नहीं दैनिक जीवन में सामान्य समस्याओं को हल करने में गणित की संकल्पनाओं तथा कौशलों का प्रयोग करके तार्किक ढंग से सोच तथा विचार कर सकते हैं।

प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं। इनका चयन बालक तथा बालिकाओं में लिंग समानता की भावना विकसित करने के उद्देश्य से किया गया है।

उद्देश्य :–

- परिवार के स्तर पर किए जाने वाले कार्यों को इस रूप में प्रदर्शित करना, जिसमें परिवार के सभी लोगों की प्रतिभागिता दिखाई दे।
- जीवन के सभी क्षेत्रों में समय, श्रम तथा क्षमता की गणना को दिखाते हुए हर काम के महत्व को प्रदर्शित करना।
- जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती प्रतिभागिता पर और अधिक बल देना।
- गणित के अभ्यासों में सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों को इस प्रकार संयोजित करना, जिससे इस दिशा में बढ़ती इच्छा शक्ति को उजागर किया जा सके।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली का प्रयोग कर के छोटे–छोटे वाक्य तथा अनुच्छेद बनाने एवं लिखने में समर्थ हो सकें।
- विभिन्न प्रकार के संदर्भों में व्याकरण का उचित प्रयोग कर सकें।

अपेक्षित उपलब्धि

बालक बालिका एवं महिला पुरुष समानता के संदर्भ में भाषा शिक्षण में एक ऐसा सम्यक दृष्टिकोण निर्मित हो सकेगा जिससे–

- लिंग समानता की भावना उत्पन्न होगी।
- बालिकाओं को भी प्रत्येक क्षेत्र में बालकों के समान अवसर दिए जाएंगें।
- पुरूषों एवं महिलाओं की क्षमताओं को समान समझा जाएगा।
- शिक्षकों में लिंग आधारित प्रचलित दुराग्रहों (Biases) को दर्शाने वाली सामग्री को शिक्षण सामग्री में से दूर करने की क्षमता का भी विकास होगा।
- शिक्षण लिंग विषमता युक्त भाषा से मुक्त हो जाएगा।
- बालिकाओं एवं महिलाओं के प्रति आदर भाव पनपेगा।
- बालक बालिकाओं तथा महिलाओं पुरूषों में मिलजुल कर कार्य करने की तथा जीवन में साझेदारी की भावना उत्पन्न होगी।
- बालिकाओं एवं महिलाओं में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मप्रतिष्ठा एवं आत्मनिर्णय जैसे उदात्त गुण विकसित होंगें।

गणित

कौशल	अध्यापन बिंदु	उभारे जाने वाले बिंदु	कुछ सुझाये गये क्रियाकलाप
1	2	3	4
1. जोड़ना	जोड़ना	जोड़ की प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं को उभारा जाएः– बालक एवं बालिकाओं की सहायता से जोड़ के संबंध में ज्ञान देना	• राधा की माता जी ने 8 घंटे आफिस में कार्य किया तथा घर आकर 2 घंटे खाना बनाया। उसने कुल कितने घंटे कार्य किया?
		गणित विषय में जोड़ने की प्रक्रिया पर प्रश्न देते समय महिला पर कार्यभार से अवगत कराकर असमानता को दूर किया जाए।	• अरूणा के माता पिता दोनों मिलकर सुबह घर का काम 2 घंटे में समाप्त कर लेते हैं। इसके बाद 6 घंटे खेत पर कार्य करते हैं। बताओं दोनों कुल कितने घंटे कार्य करते हैं?
		उत्तरदायित्वों को समान रूप से बांटने की भावना पर बल दिया जाए।	• शीला के बीमार होने पर उसकी मां शांति ने 3 दिन की तथा उसके पिता प्रदीप ने 4 दिन की छुट्टी ली। शीला की देख–रेख करने के लिए दोनों के कितने दिनों की छुट्टियां लीं?
		लड़कियों की भागीदारिता को हर क्षेत्र में उभारा	• एक विद्यालय में लड़कों ने 331 रूपये तथा लड़कियों ने 500 रूपयें एकत्र किए। बताओ लड़के और लड़कियों ने कुल कितने रूपये एकत्र किए?
		सामाजिक दृष्टि से उपयोगी तथा साहसिक कार्यों में नारी में नेतृत्व की भावना को उजागर करने पर बल दिया जाए।	• रंजना देवी एक गांव की सरपंच है। उन्होंने 5000 रूपये गांव की गली पक्की कराने में, 2000 रूपये पेड़ लगाने में तथा 1000 रूपये पीने के पानी का प्रबंध करने में खर्च किये। बताओं कुल कितने रूपये खर्च किए गए?
		जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के समान अधिकार पर बल दिया जाये।	• एक फैक्ट्री में 2425 कार्यकर्त्ता पुरूष हैं तथा 2145 महिलाएं हैं। कुल मिलाकर वहां कितने कार्यकर्त्ता हैं?
2. घटा	घटा	घटा की प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं को उभारा जाएः–	• देवी के माता–पिता को एक महीने में 8632 रूपये मिलते हैं। वे उसमें से 6232 रूपये घर चलाने तथा बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करते हैं। बताओं वे एक महीने में कितनी बचत करते हैं?

		बचत की आवश्यकता	
		बचत के महत्व को प्रदर्शित करते हुए दैनिक आर्थिक समस्याओं को हल करना।	• सुषमा 750 रूपये की एक सिलाई मशीन खरीदना चाहती है उसकी एक मास की बचत 500 रूपये है। बताइये उसे कितने रूपये और चाहिए कि वह यह मशीन खरीद सके?
3. गुणा	गुणा	गुणा की प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं को उभारा जाए:–	• रानी की मां डाक्टर है। वे हर रविवार को गांव जाती है तथा गांव वालों के स्वास्थ्य की जांच में 3 घंटे बिताती है। बताओं वह एक महीने में कितने घंटे गांव में बिताती हैं?
		घर के बाहर नारी की बदलती भूमिका को उभारिए।	
		निर्णय लेने की भूमिका का विकास कीजिए।	• शैली एक वैज्ञानिक है। उसे पता है कि एक पेड़ लगाने से उस स्थान की वार्षिक औसत वर्षा एक मिलीलीटर बढ़ेगी। इस वर्ष वर्षा ऋतु में उसने 100 पेड़ लगाए। तो बताओ उस स्थान की औसत वर्षा में कितने मिलीमीटर की वृद्धि होगी?
		बालक बालिकाओं की समान प्रतिभागिता की आवश्यकता पर बल दिया जाए।	• सीता और गोपाल घर के प्रबंध में अपने माता–पिता की आधा (1/2) घंटा सहायता करते हैं। वे एक सप्ताह में अपने माता पिता की कितने घंटे सहायता करते हैं?
		पर्यावरण संरक्षण में बालक बालिकाओं की भूमिका को स्पष्ट करना।	• राधा ने अपने घर के आंगन में एक बगीचा लगाया हुआ है। वह प्रतिदिन उस बगीचे में 15 मिनट पानी देने पर लगाती है। बताइये कि 15 दिन में वह कितने मिनट अपने बगीचे में पानी देने में लगाएगी?
		दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने की क्षमता का विकास करना।	• गणतंत्र दिवस समारोह में प्रत्येक बालिका को 0.50 मीटर रिबन चाहिए। तो बताओं 45 बालिकाओं को कितने मीटर रिबन की आवश्यकता होगी?
		विभिन्न क्षेत्रों में नारी की सक्रिय भागीदारिता को उजागर करना।	• सरिता ने कपड़े सिलाई का एक उद्योग लगाया हुआ है। वह 300 कपड़े प्रतिदिन तैयार करके बाजार में भेजती है। बताओं वह जनवरी माह में कितने कपड़े तैयार करके बाजार भेजेगी?

		बालक बालिकाओं में बचत की आदत के विकास पर बल देना	• राजकीय प्राथमिक विद्यालय, शिवाजी नगर की पांचवी कक्षा में 50 छात्र व छात्राएं हैं। प्रत्येक विद्यार्थी ने 11.50 रूपये जेब खर्च में से बचाकर स्कूल संचायिका में जमा करवाए। बताओं उन्होंनें कुल कितने रूपये संचायिका में जमा करवाए?
4. भाग	भाग	गणित शिक्षण में भाग की प्रक्रिया पर प्रश्न देते समय निम्नलिखित बिंदुओं को उभारा जाएः– छोटे परिवार के गुणों से अवगत कराना।	• प्रोमिला के पिता जी घर में एक दर्जन केले लाए। उनके घर में उनकी माता जी व एक भाई है। यदि सबको बराबर–बराबर केले मिले हों तो बताओं प्रत्येक को कितने–कितने केले मिले।
		संपत्ति में महिलाओं के समान अधिकार पर बल देना।	• राधा की माता जी बाजार से एक ग्रुस पेंसिलें लाई। यदि उनके घर के सदस्यों की संख्या ६ हो तो बताओं प्रत्येक के हिस्से में कितने–कितने दर्जन पेंसिलें आई।
			• राम लाल की संपत्ति 36,000 रूपये है। यह संपत्ति उसकी दो लड़कियों व एक लड़के में समान रूप से बांटी गई। प्रत्येक के हिस्से में कितने रूपये आए?
		महिलाओं के विभिन्न–व्यवसायों तथा सामाजिक दृष्टि से उपयोगी कार्यों में दिए जा रहे योगदान को उजागर करना।	• रीना और गीता दो बहिनें हैं। रीना वकील और गीता पायलट ऑफिसर है। उनकी मासिक आय क्रमशः 16000/– रूपये व 20000/– रूपये है। यदि वे अपनी आय का 1/5 भाग वंचित वर्ग की बालिकाओं की पढ़ाई पर दान देती हैं तो बताओ कितना कितना दान करती है।
		सामाजिक दृष्टि से उपयोगी तथा साहसी कार्यों में महिलाओं में नेतृत्व की भावना को उजागर करना।	• शीला ने स्वैटर बुनने के लिए 2 किलो 400 ग्राम ऊन बाजार से खरीदी। यदि एक स्वैटर पर 400 ग्राम ऊन लगा हो तो इससे कुल कितने स्वैटर तैयार हुए।

		परिवार के भविष्य की सुरक्षा के लिए बचत की आदत के महत्व से अवगत कराना।	रेणुका कपड़े की मिल में एकाउन्टेंट है। उसकी मासिक आय 10,600/– रूपये है। उसके पति कालेज में प्राध्यापक हैं। उनकी मासिक आय 10,400/– रूपये है। ये दोनों अपनी मासिक आय का 1/10 भाग डाकखाने की आवर्ती जमा योजना में जमा कराते हैं। तो बताओं एक वर्ष में वे दोनों डाकखाने में कितने रूपये जमा कराते हैं?
5. विश्लेषण	तार्किक शक्ति	बालक बालिकाओं में तार्किक शक्ति विकसित करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं को उभारा जाए:– बालक बालिकाओं को महिलाओं के शिक्षा स्तर के प्रति सचेत करना तथा लिंग भेद अनुपात को उजागर करना।	निम्नलिखित तालिका में उ०प्र० की वर्ष 1981 तथा 1991 का महिला पुरूष अनुपात दर्शाया गया है। वर्ष महिला पुरुष लिंग अनुपात 1981 1000 पुरूष : 885 महिलायें 1991 1000 पुरूष : 876 महिलायें इसके आधार पर निम्नलिखित उत्तर दें– क) 1981 में महिला पुरूष अनुपात कितना है। ख) 1991 में महिला पुरूष अनुपात कितना है ग) 1981 की तुलना में 1991 में महिलाओं का अनुपात कम है या ज्यादा यदि कम है तो क्यो? यदि ज़्यादा है तो क्यो?
समय, श्रम तथा क्षमता	समय, श्रम तथा क्षमता का महत्व	शारीरिक कार्य के महत्व तथा मेहनत के फल को उजागर करना।	• मुख्याध्यापिका स्कूल में बगीचा बनवाना चाहती हैं। यदि वे 50 छात्राओं को प्रतिदिन 3 घंटे काम पर लगाती हैं तो बगीचा 16 दिन में तैयार हो जाता है। यदि ये छात्राएं 4 घंटे प्रतिदिन काम करें तो बगीचा कितने दिनों में तैयार होगा।

परिवेश अध्ययन शिक्षण

भूमिका

बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं। वे सदैव नये तथ्य जो उनके सामने आते हैं, जो उनकी समझ शक्ति से बाहर होते हैं, उनके समाधान के लिए अनेक प्रकार से सोचते हैं। यदि इस समय उनकी जिज्ञासा शांत हो जाए तो वे आगे पुनः सोचने के लिए विवश हो जाते हैं। उनका यह बचपन का जोश कई बार जीवन के प्रारंभ से ही विभिन्न दबावों तथा पारंपरिक भूमिकाओं के दबावों में ही समाप्त हो जाता है। इस प्रकार उनका शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक विकास रूक जाता है। इस प्रक्रिया का सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव बालिकाओं पर पड़ता है। उनके जीवन के आरंभ में ही खेल के साथ–साथ उनकी बहुत सी स्वाभाविक सृजनात्मक अभिव्यक्तियों पर रोक लगा दी जाती है जो हर बच्चे का मूलभूत अधिकार है। उन्हें केवल समाज द्वारा पूर्व निर्धारित भूमिकाओं को ही स्वीकार करने पर बल दिया जाता है।

परिवेश अध्ययन के द्वारा हम बालिकाओं की दबी हुयी भूमिका को उजागर कर सकते हैं। यहां विषय वस्तु तथा पाठ्यक्रम की कुछ अध्यापन प्रक्रियाओं को अपनाने का सुझाव दिया गया है। इन सुझाए गए क्रियाकलापों के द्वारा बालक तथा बालिकाओं में प्रचलित भेद को कम किया जा सकता है तथा बालिकाओं की स्वाभाविक सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को विकसित किया जा सकता है। इससे बालिका भी राष्ट्र की मुख्य धारा में सक्रिय होकर योगदान कर सकेगी तथा वह रूढ़िवादी विचारधाराओं से ऊपर उठकर समाज में सबल, आत्मसम्मानित, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर बन सकेगी।

परिवेश (पर्यावरण) के दो मुख्य पक्ष हैं– प्रकृति और मानव। दोनों पक्ष सामाजिक अध्ययन तथा विज्ञान अध्ययन के रूप में पर्यावरण अध्ययन के रूप में स्पष्ट रूप सें दिखाई देते हैं। अतः पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :–

- बालक व बालिकाएं संपूर्ण पर्यावरण को एक समन्वित इकाई के रूप में देंखें।
- मानव के पर्यावरण तथा सामाजिक संबंधों को पहचानें, समझे तथा उन संबंधों को संरक्षण देने में सहयोग दें।

1	2	3	4
			• महिला की सहायता से ऊपर उठे परिवार का उदाहरण देकर बिंदु को उभारा जा सकता है।
		सुख अपार के लिए परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग।	• घोंसला बनाते समय नर तथा मादा पक्षी के संयुक्त प्रयासों को उदाहरणार्थ लिया जा सकता है।
स्वस्थ जीवन	पर्यावरण	स्वस्थ जीवन का ज्ञान देते	• प्रार्थना सभा में बच्चों को स्वच्छ जीवन

		समय हम निम्नलिखित बिंदु उभार सकते हैं :— स्वस्थ जीवन की आवश्यकता।	के महत्व से अवगत कराया जाए। स्वस्थ तथा अस्वस्थ बच्चे का उदाहरण दिया जा सकता है। बालिकाओं में साफ तथा स्वच्छ रहने की आदत होती है। उनकी इस आदत को बच्चों के सामने उजागर किया जाए।
		स्वच्छ हवा, पानी एवं रोशनी का महत्व	• महिलाओं के स्वस्थ होने की नितांत आवश्यकता पर परिचर्चा कर उन्हें अवगत कराया जाए।
			• स्वच्छ हवा, पानी एवं रोशनी तथा संतुलित भोजन के उदाहरण निम्नलिखित रूप से दिए जा सकते हैं:— स्वच्छ हवा :— स्वच्छ हवा मे टहलने से चित्त प्रसन्न हो जाता है। कभी कभी चलते समय जब गंदी हवा से गुजरते हैं तो हमें अपने नाक—मुँह पर कपड़ा/रूमाल रखना पड़ता है अर्थात् गंदी हवा को हमारे फेफड़े भी स्वीकार नहीं करते। स्वच्छ पानी :— अध्यापक बालक बालिकाओं को यह समझाने का प्रयास करे कि स्वच्छ जल को हम पीना पसंद करते हैं। कई बार अस्वच्छ जल से दस्त, उल्टी तथा पेट की बीमारियां हो जाती हैं क्योंकि गंदगी जैसे बाहर दुर्गंध फैलाती हैं वैसे ही अंदर जाने पर भी दुर्गंध पैदा करती हैं। स्वच्छ जल रखना या लाना बालिकाओं की ही जिम्मेदारी नहीं है बल्कि सभी की है। जैसे एक काँच के बर्तन में हैण्ड पम्प का स्वच्छ जल तथा दूसरे में तालाब का पानी लें। दोनों में क्या अन्तर है ध्यान से देख कर लिखें। अध्यापक इस प्रकार के उदाहरण देते समय बालिकाओं को परंपरागत चूल्हों से

			निकलने वाले धुंए तथा धुआं मुक्त चूल्हे दिखाए। उन्हें गोबर गैस आदि के चूल्हें दिखाएं ताकि बालिकाएं बड़ी होकर महिलाओं की भूमिका में स्वस्थ जीवन जी सकें।
		संतुलित भोजन की आवश्यकता	• संतुलित भोजन :– संतुलित भोजन की संकल्पना के लिए बच्चों द्वारा लाए गए दोपहर के भोजन की जांच करें। उन्हें सरकार द्वारा दिए जाने वाले दोपहर के भोजन को भी संतुलित भोजन के नमूने के रूप में दे सकते हैं। यहां शिक्षक कभी–कभी शिक्षक–अभिभावक संघ (पी.टी.ए.) की सभा में लिंग भेद किए बिना संतुलित भोजन की आवश्यकता की जानकारी अवश्य दें।
		स्वच्छ परिवेश की भावना जागृत करना।	• स्वच्छ परिवेश :– अध्यापक बालक बालिकाओं में स्वच्छ परिवेश की भावना जागृत करने के लिए सुबह कक्षा में झाड़ू लगाने, सफाई करने तथा सजावट करने में दोनों को समान भागीदारिता दें ताकि बालकों में स्वच्छ परिवेश के उत्तरदायित्व का जागरण हो।
		निर्णय लेने का महत्व।	अध्यापक निर्णय के महत्व को बालक बालिकाओं को समझाएं तथा यह तथ्य भी उजागर करें कि अच्छे तथा समय पर निर्णय लेने से सफलता मिलती है। जिसमें निर्णय शक्ति होती है वे सदा अग्रिम पंक्ति के व्यक्ति होते हैं। गांव की पंचायत के अच्छे निर्णयों का गांव के विकास पर क्या प्रभाव पड़ा, चोरी, डकैती, उत्पात और अतिक्रमण आदि पर पंचायत के निर्णयों को उदाहरणार्थ बताया जाए।
			• बालिकाओं को कक्षा मॉनीटर बनाकर, स्कूल कमेटियों में सदस्य बनाकर निर्णय लेने की भावना का उनमें विकास किया जा सकता है।
सफाई की	नागरिकता	सफाई की आदतों का ज्ञान	

आदतें।		देते समय हम निम्नलिखित बिंदु उभार सकते हैं :–	
		सामाजिक तथा प्राकृतिक परिवेश में अपनी भलाई के प्रति जागरूकता।	• अध्यापक सामाजिक तथा प्राकृतिक परिवेश की चर्चा करते समय बालक बालिकाओं को परिवेश को स्वच्छ रखने के उत्तरदायित्व से अवगत कराएं। इसके उदाहरणार्थ गली, मोहल्ले की सफाई, पानी को गढ़े में न रूकने देना, घर की तरह गली को भी साफ रखना आदि को ले सकते हैं। 'सफाई से भलाई'– इस संकल्पना के प्रति बालक बालिकाओं को जागरूक किया जा सकता है।
		लिंग–भेद तथा आर्थिक स्थिति के बावजूद सफाई की आदतें।	• सफाई की आदत को विकसित करने के लिए प्रार्थना सभा में एवं कक्षा कक्ष में बालक व बालिकाओं दोनों को समान भागीदार बनना चाहिए। दोनों के कपड़े, नाखून, दॉत व शारीरिक सफाई पर अध्यापक नजर रखें। लिंग–भेद अपनाकर सफाई को प्रोत्साहन न दिया जाए।
			• आर्थिक स्थिति से कमजोर वर्ग के बच्चों को स्कूल की सहायता से कपड़े, साबुन, दातुन, कंघी, तेल आदि देकर सफाई की आदत विकसित की जा सकती है। इसी प्रकार गंदे (अस्वच्छ) बच्चों को प्रार्थना सभा में ही सफाई के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
		शारीरिक गुण तथा असमानताएं लिंग–भेद का कारण नहीं।	• शारीरिक गुण तथा असमानताएं लिंग–भेद का कारण नहीं – इस तथ्य को उजागर करने के लिए अध्यापक बालक बालिकाओं को समान कार्य दें। खेल में समान भागीदारी दें, प्रार्थना सभा में भी समान भागीदारी दें। बालिकाओं से स्कूल में बालिकाओं के ही कार्य जैसे सफाई करना, पानी लाना आदि के आदेश न दें।

शारीरिक शिक्षा एवं खेल शिक्षण

भूमिका :—

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। शिक्षा और बच्चों की खेल की का अटूट संबंध है। यदि खेल की प्रवृत्ति को शिक्षा के माध्यम से नियमित कर दिया जाए तो प्रतिफल अवश्य ही संतोषप्रद होंगें। बच्चे की प्रवृत्ति बहुत अधिक मुस्कराने की होती है। बड़े होने पर यह बहुत ही कम रह जाती है। मुस्कराने की प्रवृत्ति का संबंध खेल से अधिक है। इसलिए अधिक बल शारीरिक शिक्षा पर दिया गया है।

उद्देश्य :—

- बच्चे का सर्वागींण विकास करना
- बच्चे को रूढ़िवादिता से मुक्त करना
- परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न करना
- राष्ट्र/देश के प्रति सद्भावना तथा सम्मान उत्पन्न करना
- राष्ट्रीय संपत्ति के प्रति उतरदायित्व की भावना जागृत करना

शारीरिक शिक्षा एवं खेल

कौशल	अध्यापन बिंदु	उभारे जाने वाले बिंदु	कियाकलाप
1	2	3	4
	सृजनात्मक कियाएं	बालक–बालिकाओं को स्वच्छ रहने के समान अवसर प्रदान करना।	
बच्चे का सर्वागींण विकास–शारीरिक स्वच्छता			• अध्यापक ध्यान दें कि कमानुसार बालक एवं बालिकाएं दोनों वर्ग बारी–बारी पूरी कक्षा के नाखून, बाल, कपड़े तथा बस्ते आदि का निरीक्षण करें।
			• अध्यापक द्वारा सप्ताह में एक बार कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की टोलियां बनवाकर शारीरिक स्वच्छता का मुकाबला करवाया जाए।
स्वास्थ्य रक्षा	–सम–	दोनों को स्वस्थ रहने के समान अवसर प्रदान करना। छात्र एवं छात्राओं में आत्म–विश्वास विकसित करना तथा स्वास्थ्य रक्षा के समान अवसर प्रदान करना।	• अध्यापक सभी बच्चों से दौड़ने, उछलने, कूदने, रस्सी कूदने, गोला फेंकनें आदि के मुकाबले करवाएं। खो–खो एवं कबड्डी जैसे खेल भी खिलाए जाएं।
			• अध्यापक कक्षा को चार टोलियों में विभाजित करें। दो टोलियां भोजन आदि को सही ढंग से न रखने से स्वास्थ्य पर होने वाले कुप्रभावों को अभिनय द्वारा व्यक्त करें। दो टोलियां भोजन व पानी को सही ढंग से रखने का अभियन करें तथा उसके लाभ बताएं।
सुरक्षा		दोनों में समान रूप से सुरक्षा के लिए सूझ–बूझ विकसित करना।	• दोनों वर्ग के बच्चों को बस, रिक्शा, तांगा, स्कूटर एवं कार आदि की भूमिका देकर सड़क पर सुरक्षित चलने के नियमों का अभ्यास करवाया जाए। अध्यापक द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रत्येक बालिका बारी–बारी से चौराहे पर खड़े सिपाही की भूमिका निभाए।
		दोनों में उत्तरदायित्व की भावना को जागृत किया जाना।	• कोई दुर्घटना हो जाने पर बालक एवं बालिकाओं का क्या उत्तरदायित्व है, कियाकलाप द्वारा समझाया जाए जैसे :

			• कक्षा में कोई छात्रा/छात्र मूर्छित हो गया/गई है, अध्यापक बच्चों को बताएं कि बच्चे उस छात्र/छात्रा से दूर हट जाएं। उसे हवा करें। बालक एवं बालिका कोई भी उस पर पानी की छींटे मारे। इस प्रकार उसे सचेत करने का प्रयास करें।
	सामाजिक व्यवहार का विकास	बालक एवं बालिकाओं को परस्पर निःसंकोच वार्तालाप करने के अवसर देना।	• पारस्परिक वार्तालाप में खेल के समय अपशब्द, गाली–गलौच आदि का प्रयोग न करें। परस्पर सहयोग दें। एक–दूसरे की सहायता करें।
	परिवेश की सुंदरता	लड़के एवं लड़कियों को परिवेश के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अभ्यास करवाने के संभव प्रयास कराना। बालिकाओं को भी नेतृत्व के अवसर प्रदान करना।	• प्रत्येक कक्षा के छात्र एवं छात्राओं की टोलियां अपनी–अपनी कक्षा को साफ सुसज्जित रखें तथा विद्यालय के प्रांगण को साफ रखें। इसका निरीक्षण शिक्षक/मुख्य शिक्षक करें। इनका नाम श्यामपट्ट पर लिखा हो। सफाई व रखरखाव का कार्य केवल छात्राओं को ही न सौंपा जाए। छात्रों को भी इस कार्य की जिम्मेदारी दी जाए।

कला शिक्षा शिक्षण

भूमिका

कला का हमारे जीवन से मृत्यु पर्यंत अटूट संबंध है। कला हमारी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। कला हमारी स्वाभाविक मांग को तृप्त करती है। कला बालक एवं बालिकाओं दोनों के अंदर आत्मविश्वास पैदा करती है।

कला मनुष्य को मनुष्य बनाती है। उदर पूर्ति तक तो मनुष्य और पशु में कोई अंतर नहीं। दोनों में अंतर करती है कला। कला वह माध्यम है जो मनुष्य की अनुभूतियों व अभिवृत्तियों को व्यक्त करने में सहायता करती है। जिन भावों को मनुष्य भाषा के माध्यम से कहने में स्वयं को असमर्थ पाता है वही भाव वह रेखाओं द्वारा, मिट्टी की आकृतियों द्वारा तथा अपनी भाव भंगिमाओं द्वारा बड़ी कुशलता से प्रदर्शित कर सकता है। कला किसी की बपौती नहीं होती। उस पर स्त्री–पुरूष, छोटे–बड़े, अमीर–गरीब सबका बिना भेदभाव समान अधिकार होता है। अभिप्राय यह है कि कला एक ऐसा माध्यम है जो बालक/बालिकाओं में अभिव्यक्ति संबंधी आत्मविश्वास का विकास करती है।

कला–शिक्षा

कौशल	अध्यापन बिंदु	उभारे जाने वाले बिंदु	क्रियाकलाप
1	2	3	4
अभिव्यक्ति	कविता पाठ	बालक एवं बालिका दोनों में आत्मविश्वास जागृत करना	• अध्यापक कक्षा में बालिकाओं एवं बालक दोनों से कविता पाठ करवाएं।
	नृत्य	–सम–	• अध्यापक सप्ताह में एक दिन (बाल सभा के दिन) अवश्य ही नृत्य प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाएं।
	अभिनय	–सम–	• छात्र एवं छात्राओं में से प्रत्येक से क्रमानुसार अभिनय करवाएं। चाहे मूक अभिनय करवाएं चाहे किसी का रोल करवाएं।
	फैन्सी ड्रैस	–सम–	• अध्यापक छात्रों से मीराबाई, रजिया सुल्तान तथा रानी झांसी की भूमिका निभाने के लिए फैन्सी ड्रैस का प्रदर्शन करवाएं तथा लड़कियों से गांधी जी, श्री भीमराव अम्बेडकर की भूमिका फैन्सी ड्रैस में करवाएं।
चित्रकारी	चित्र	चित्रों द्वारा स्पष्ट करना कि बालिकाएं भी किसी भी व्यवसाय का चयन कर सकती हैं।	• अध्यापक बालक बालिकाओं से विद्यालय जाते हुए बालक एवं बालिकाओं के चित्र बनवाएं। • अध्यापक बालिकाओं से उनकी पसंद के व्यवसायों के चित्र तथा बालकों से उनकी पसंद के व्यवसायों के चित्र बनवाएं।

अन्त में ये भी जानें

शिक्षा के माध्यम से लड़कियों में स्वतंत्रता लायी जायेगी किंतु उससे पहले यह समझना होगा कि लडके व लडकी के मामले में ही स्वाधीनता या प्रतिष्ठा की संज्ञा एक ही हो। अवसर मिलने पर लडकियां लडकों के बराबर योग्यता से मुकाबला कर सकती है, इसे मन से विश्वास करना ही पडेगा।

विश्व में इसी सत्य को समझा जा रहा है कि सभी समग्र विकास के लिये शिशु कन्याओं को शिक्षित करना आवश्यक है, फलस्वरूप

- **वर्ष १९९६ को ' शिशु कन्या वर्ष ' घोषित किया गया।**
- **१९९०–२००० इस दशक को ' शिशु कन्या दशक ' घोषित किया गया।**

- **इस ' शिशु कन्या दशक ' के जातीय कर्म सूची में कई महत्वपूर्ण विषय का उल्लेख किया गया है।**
    - केवल कानून बनाकर ही नहीं, वास्तव में उनके साथ जीवन व परिवार में शिशु कन्या की अवस्था में भी उन्नति करनी होगी।
    - इस विषय पर जनसाधरण में एक चेतना जागृति करना तथा इस प्रकार का वातावरण सृजित करना पड़ेगा जहॉ शिशु कन्याये स्वाधीनतापूर्वक अपने अधिकार भोग सकें।

लडकियों में शिक्षा का विस्तार ठीक से होने पर समाज में उसके कई प्रभाव पडेंगें। यथा–

- योग्य आयु में लडकियों का विवाह होना।
- लडकियों की संतान कम होगीं।
- परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि भी कम होगी।
- अल्पायु में शिशुओं की मृत्यु दर घटेगी।
- लड़कियां अपनी स्वास्थ्य के प्रति सचेत होंगीं, जिससे दीर्घायु होंगीं।
- योग्य आयु में उनके आर्थिक मामले में योगदान की दर में वृद्धि होगी।
- जो बालिकायें काम करती हैं, साथ–साथ यदि पढ़ाई भी करती रहें, तो वे एक दक्ष कर्मी हो सकेंगीं साथ ही उनकी आर्थिक उन्नति भी हो सकेगी।

'१००० बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा का एक और वर्ष अतिरिक्त दिये जाने से अनुमानतः ३०० बच्चों का जन्म, ४३ नव–शिशुओं की मृत्यु तथा दो माताओं की प्रसूति मृत्यु को रोका जा सकता है।'

अन्तर्राष्ट्रीय विकास अभिकरण

तृतीय दिवस

अभियान गीत – हम होंगे कामयाब

सुगमकर्ता हेतु निर्देश :–

⟹ सुगमकर्ता प्रतिभागियों से आदर्श संकुल की अवधारणा को, आवश्यकता, गतिविधियों को, न्याय पंचायत चयन के मापदण्ड को चार्ट द्वारा बतायेगा।

⟹ चार्ट पर वह पूर्व में लिख कर तैयार रखेगा (सुगमकर्ता)

⟹ आदर्श न्याय पंचायत के लिए क्या क्या गतिविधियाँ अपनायी जानी चाहिये पर मौलिक विचार भी वह अध्यापकों के आमन्त्रित करेगा, विचार स्पष्ट न होने पर स्वयं कोर टीम गठन, महिला प्रेरक समूह, माता शिक्षक संघ/अभिभावक शिक्षक संघ का गठन व उनकी आवश्यकता व कार्यो की चर्चा कर क्रियान्वयन करना बताएगा।

आदर्श संकुल की अवधारणा :–

जनपद की ऐसी न्याय पंचायतें जो बालिका शिक्षा के मामले में उपेक्षित रही हैं जहाँ बालिकाओं का नामांकन तथा महिला साक्षरता की दर न्यूनतम है वहाँ बालिका शिक्षा के लिए विशेष प्रयास करने के उद्देश्य से आदर्श न्याय पंचायत का चयन किया गया है :–

आदर्श संकुल की आवश्यकता क्यों?

आदर्श संकुल विकास की आवश्यकता का प्रमुख कारण प्रदेश के डी0पी0ई0पी0 जनपदों के अर्न्तगत अल्पसंख्यक एवं अनुसूचित वर्ग तथा कुछ क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर बहुत ही कम होना है।

बालिकाओं के नामांकन तथा ठहराव की स्थिति भी इन जनपदों में बहुत संतोषजनक नहीं है। अनुसूचित जाति की स्थिति तो बहुत ही दयनीय है। यद्यपि डी0पी0ई0पी0, उ0प्र0 इन समस्याओं से भली भाँति परिचित है और इसके समाधान के लिए कई प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा हस्तक्षेप कर रहा है, परन्तु समस्या की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए यह योजनाबद्ध हस्तक्षेप पर्याप्त सिद्ध नहीं हो पा रहा है। साथ ही साथ व्यवहारिक रूप में भी बड़े पैमाने पर संसाधनों तथा समय का निवेश उपयुक्त नहीं है। अतः यह निर्णय लिया गया कि न्याय पंचायत पर सभी प्रकार के क्रिया कलापों को लागू कर विशेष प्रयास किया जायें। आदर्श संकुल विकास के लिए हर प्रकार की सहायता उपलब्ध करायी जायें।

आदर्श संकुल में क्या हासिल करना है?

- ♦ संकुल के प्रत्येक विद्यालय में शत प्रतिशत नामांकन
- ♦ शाला त्याग को कम करना या रोकना

- ♦ विद्यालय रहित गांवों में वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र या समुदाय के सहयोग से शिक्षा सुविधा मुहैया कराना
- ♦ बच्चों की उपलब्धि का स्तर बढ़ाना

न्याय पंचायत के चयन हेतु मापदण्ड :–

1. न्यून महिला शिक्षा दर
2. बालिकाओं का न्यून नामांकन तथा ठहराव
3. अनुसूचित जाति अथवा अल्पसंख्यक बाहुल्य क्षेत्र
4. संकुल में 10-12 से अधिक गांव न हो
5. सक्रिय ग्राम शिक्षा समितियां
6. महिला संगठनों तथा अन्य स्वयं सेवी संगठनों का कार्यरत रहना

⇒ चयनित न्याय पंचायत में पूर्व तैयारी :–

कोर टीम का गठन :–

प्रस्तावित सदस्य –

1. पुरूष/महिला
2. सक्रिय व प्रभावशाली व्यक्ति
3. महिला समूह/युवा संगठन के सदस्य
4. एन0पी0आर0सी0 समन्वयक
5. सेवानिवृत्त लोग
6. समुदाय के विशेष वर्गो के मुखिया/नेतृत्व/प्रभावित करने वाले व्यक्ति
7. जिला समन्वयक बालिका शिक्षा/सामु0 सह0

7. विशेषज्ञ बेसिक शिक्षा अधिकारी

- यह आवश्यक है कि जो व्यक्ति उपरोक्त टीम में हो वे स्थानीय हो तथा पूर्ण सहयोग करें।

* कोर टीम अपनी सुविधानुसार बैठक करें तथा गतिविधियों को लागू करायें।

माता शिक्षक संघ/अभिभावक शिक्षक संघ का गठन :–

न्याय पंचायत के ऐसे गांवों में जहाँ विद्यालय हैं, उनमें माता शिक्षक/अभिभावक शिक्षक संघ का गठन होगा जिसमें निम्न बच्चों की 10 माताएं/अभिभावक होंगे –

- ऐसे बच्चे जो नियमित विद्यालय जाते हों
- ऐसे बच्चे जो लम्बे अन्तराल के बाद विद्यालय आते हो
- ऐसे बच्चे जो शालात्यागी हो
- ऐसे बच्चे जो विद्यालय जाने की उम्र के हैं लेकिन विद्यालय नही आते

माता शिक्षक संघ/अभिभावक शिक्षक संघ की माह में एक बार तथा आवश्यकता पड़ने पर बैठक करें।

महिला प्रेरक समूह का गठन :–

ऐसे गांव तथा मजरे जहाँ प्राथमिक विद्यालय नहीं है, महिला प्रेरक समूह 10-12 महिलाओं का गठित किया जायेगा। इस समूह में वे महिलाएं होगी जो अपनी बातें कहने की क्षमता रखती हो। महिला प्रेरक समूह की माह में एक बार बैठक होगी। यह समूह अपने बच्चों के लिए शिक्षा योजना बनायें तथा शिक्षा सुविधा उपलब्ध करायें। प्रत्येक समूह का नेतृत्व एक महिला संयोजिका के रूप में करेगी।

प्रारम्भिक गतिविधियां :–

- चुने हुए गांवों में अर्थपूर्ण नामांकन के लिए वातावरण तैयार करना।
- अध्यापक बालिका शिक्षा से सम्बन्धित सभी मामलों को निभाने के लिए (कक्षा के भीतर अथवा बाहर) में अपने आपको सक्षम पायेंगे।
- उद्देश्य पूर्ति के लिए समुदाय को पहले से ही प्रेरित करें और उन्हें उस कार्यक्रम के लिए तैयार रखें।
- कोर ग्रुप अपनी भूमिका से भली–भाँति परिचित होगा।

नामांकन अभियान के लिए :–

- स्कूल चलो अभियान जुलाई माह तक हर गांव में शुरू कर दिए जायें।
- पदयात्रा, प्रभातफेरी, कला जत्था, दीवार लेखन, पंफ्लेट का प्रयोग किया जायें।
- स्थानीय कलाकारों से नुक्कड़ नाटक इत्यादि करवाया जायें।
- अभिभावकों, गांव के लोगों से सम्बन्धित अधिकारियों के साथ बैठक की जाएं।

- घर–घर जाकर प्रेरणात्मक भ्रमण।

नामांकन अभियान के महत्वपूर्ण बिन्दु :–

- बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझना तथा बालिका नामांकन अभियान के लिए लोगों को प्रेरित करना।
- घर–घर जाकर वास्तविक सूचनाएं एकत्रित करना तथा उन सूचनाओं के आधार पर कार्य करना।
- स्कूल के वातावरण को सुधारना।
- समुदाय को स्कूल संचालन में भागीदार बनाना तथा दोनों के बीच एक पारस्परिक संबंध स्थापित करना।
- इस तथ्य को समझाना कि "बालिका शिक्षा" सारे कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु है।

स्कूल में नामांकन के पश्चात् बालिकाओं के ठहराव के लिए गतिविधियाँ :–

- वह बालिकाएं जो विद्यालय नहीं आ सकती हैं, उनके लिए अनौपचारिक स्कूल तथा स्कूल में लचीलापन लाने की व्यवस्था करना।
- बालिका शिक्षा को आधार प्रदान करने के लिए शिशु शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था, बाल–विकास कार्यक्रम के साथ नए ECCE केन्द्र खोलना।
- स्कूल में बालिकाओं की उपस्थिति का निरीक्षण करना तथा उन्हें भी स्कूल के विभिन्न कार्यों में भागीदारी देना।
- गांव एवं एनपीआरसी स्तर पर एक नियमित बैठक कर कार्यो की समीक्षा करना तथा इन बैठकों में एक, दूसरे के विचारों को महत्व देना तथा भविष्य के लिए कार्ययोजनाएं तैयार करने जैसे–कार्य भी किए जा सकते हैं।
- बालिकाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए स्कूल में कार्यक्रम आयोजित कराना।
- आस–पास के गांवों का शैक्षिक भ्रमण करना।
- वी0ई0सी0 सदस्यों विशिष्ट तौर से महिलाओं की क्षमता वृद्धि करना।

आवश्यकता पड़ने पर यह भी किया जा सकता है :–

- बालिकाओं को स्कूल लाने व वापस घर ले जाने के लिए संकुल माता की व्यवस्था करना।
- बालिकाओं की उपलब्धि स्तर में वृद्धि हेतु विशिष्ट कोचिंग इत्यादि की व्यवस्था करना।

☛यह भी करें

१. कक्षा में बालिका ही मॉनीटर बनाई जाए।

२. कक्षा में उपस्थिति **Alphabetical** क्रम में बिना किसी भेदभाव में बुलायी जाए तथा बालिकाओं के उनके प्रथम नाम से बुलाया जाए।

३. विद्यालय /ई.सी.सी.ई. केन्द्रों पर होने वाली प्रातः प्रार्थना बलिका द्वारा भी कराई जाए तथा संकल्प भी बालिका द्वारा ही दिलाया जाए।

४. बालिकाए भी उपस्थिति लें।

५. बालिकाओं को कक्षा में प्रथम पंक्ति में जगह दें।

६. बालिकाओं से भी पी.टी. कराएं।

७. विद्यालय के कार्यक्रमों में बालिकाएं भी सक्रिय रूप से प्रतिभाग करें।

८. विद्यालय में होने वाली गतिविधियों में विशेष तौर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं में बालिकाओं को प्रतिभाग करने हेतु प्रोत्साहित किया जाए।

९. बालिकाओं को विद्यालय में होने वाली गतिविधियां, खेलकूद कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने हेतु प्राथमिकता दें।

- किशोर वय की लड़कियों को स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्वच्छता, मनोरंजन इत्यादि के लिए व्यवस्था करना।

नित्य स्कूल जायेंगे,
पीला निशान छुड़ायेंगे

न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र प्रभारी – भूमिका एवं कृत्य :–

- शिक्षकों की मासिक बैठक/कार्यशालाओं का आयोजन
- शिक्षण अधिगम, प्रशिक्षण सामग्री का निर्माण, प्रदर्शन एवं आदान–प्रदान
- राज्य/जनपदीय/विकासखण्ड तथा अन्य कार्यालयों से प्राप्त आदेशों, निर्देशें, परिपत्रों की जानकारी, सूचनाओं का आदान–प्रदान तथा संकलन।
- विभिन्न शैक्षिक तथा अकादमिक कार्यक्रमों/गतिविधियों का आयोजन।

- ग्राम/संकुल आधारित शैक्षिक नियोजन, सर्वेक्षण आदि से सम्बन्धित गतिविधियों का सूक्ष्म नियोजन तथा स्कूल मानचित्रण हेतु सर्वेक्षण, स्कूल सांख्यिकी प्रपत्रों की सूचनाओं का संकलन, स्कूलों में नामांकन सम्बन्धित कार्य।
- ग्राम स्तरीय कार्यक्रमों का संचालन।
- विद्यालयों का भ्रमण, महिला प्रेरक समूहों, ग्राम शिक्षा समितियों की बैठकों का आयोजन करना तथा आख्याओं को ब्लाक संसाधन केन्द्रों पर जमा करना। इसके अलावा ई0सी0सी0ई0 केन्द्रों का भ्रमण।
- वैकल्पिक केन्द्रों का भ्रमण।
- ठहराव परिक्रमा को ग्राम स्तर/स्कूल स्तर पर लागू करना।
- जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के समस्त कार्यक्रमों को ग्राम/स्कूल स्तर पर लागू करना।

माँ–बाप ने दिया ध्यान,
मैंने पाया हरा निशान।

सुगमकर्ता के लिए निर्देश :–

सुगमकर्ता अध्यापकों से बालिकाओं के शत–प्रतिशत नामांकन तथा ठहराव हेतु उनके ग्राम हेतु योजना बनवाएगा। योजना बनवाकर प्रतिभागियों से प्रदर्शन करायेगा योजना का सही स्वरूप न आने पर सुगमकर्ता स्वयं स्पष्ट करेगा कि उन्हें क्या–क्या करना है।

और भी हैं राहें :–

प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्यों को शत प्रतिशत हासिल करने की असीमित संभावनाएं हैं। हमें बस अपना नजरिया बदलने की जरूरत है–

- **नीचे कुछ कारगर तरीके दिये गये हैं जिन्हें एक शिक्षक होने के नाते हम अपनाकर देखें तो निश्चित रूप से बदलाव पायेंगे :–**
- **समुदाय का भाग लेना बढ़ाइये :–**

शिक्षा कार्यक्रम तभी सफल होगा जब विद्यालय स्तर पर माँ–बाप शामिल होंगे। स्कूल कार्यक्रम की योजना और विकास में माता–पिता तथा समुदाय के भाग लेने से न केवल समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यक्रम बनता है बल्कि उसकी सफलता के लिए माता–पिता भी एड़ी–चोटी का जोर लगाते है। अतः माता–पिता को अपने बच्चों की शिक्षा में शमिल होने का अवसर मिलना चाहिए तथा यह अवसर हम निम्न मंचों से दे सकते हैं :–

- ♦ माता–शिक्षक संघ की नियमित बैठक करके
- ♦ अभिभावक–शिक्षक संघ की नियमित बैठक करके
- ♦ ग्राम शिक्षा समिति की नियमित बैठक द्वारा

शिक्षा के पक्ष समर्थन और सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा दीजिए :–

बालिका शिक्षा के बीच आने वाली निम्नवत् रूकावटों में स्थानीय समुदाय के माध्यम से हस्तक्षेप की पहल करें जैसे :–

1. दूर दराज के क्षेत्र जहां माता–पिता अशिक्षित हैं और लड़कियों की शिक्षा के सम्भावित प्रयासो से अनभिज्ञ हैं ;
2. वे संस्कृतियां जहां लड़कियों को घर से बाहर की गतिविधियों में भाग लेने की परम्परागत रूप से मनाही है ;
3. वे समाज जहां स्त्री शिक्षा के प्रति लोगों के विचार और रवैये बहुत पुराने हैं ;
4. वे क्षेत्र जहां गरीबी के कारण माता–पिता को यह सोचना पड़ता है कि बालक तथा बालिका में से किसे विद्यालय भेजे ;

पाठ्यक्रम को लड़कियों के दैनिक जीवन के अनुरूप ढालिये :–

जो पाठ्यक्रम लड़कियों के जीवन के अनुरूप है यदि जो पाठ्यक्रम शिक्षा को कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य और पोषक आहार जैसे स्थानीय विषयों को जोड़ता है, जो स्थानीय भाषा का प्रयोग करता हो तथा स्त्री–पुरूष का परम्परागत अन्तर दूर करता हो, उसी से लड़कियों को लाभ होगा।

शिक्षा सुधार में रूचि प्रकट करने वाले समुदायों की सहायता कीजिए :–

जो समुदाय शिक्षा सुधार में रूचि प्रकट करता है उनके सफल होने की सम्भावना अधिक है। ऐसे समुदाय को चिन्हित करें तथा उनकी यथासम्भव सहायता करें। अन्य समुदायों को उनके द्वारा किये गये प्रयासों को अन्य समुदायों को दिखायें तथा उन्हें समय–समय पर प्रोत्साहित करें।

समुदाय के नेताओं का समर्थन प्राप्त करिये :–

गांव में छोटे–छोटे समुदाय होते हैं। प्रत्येक समुदाय का एक नेता होता/होती है। यदि शिक्षा कार्यक्रम में इन नेताओं का समर्थन प्राप्त हो जायें तो माता–पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए आश्वस्त हो जाते हैं।

लचीली समय सूची बनायें :–

दैनिक समय सूची में ऐसा सुधार किया जा सकता है ताकि लड़कियां अपने जरूरी कार्यो को करने के बाद विद्यालय आ सके इसे न सिर्फ नामांकन बढ़ेगा बल्कि शालात्याग की दर में भी कमी आयेगी। समय सूची में परिवर्तन समुदाय की मांग के अनुरूप होना चाहिए।

एक नजर में

बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा में शिक्षिका के हिसाब से हमें देखना है।

- 5-9 वर्ष की छोटी–छोटी बालिकायें जो अभी तक इस इलाके से बाहर हैं, उन्हें चिन्हित करना तथा उनके अभिभावकों को समझाया जाये कि क्यों लड़कियों को स्कूल भेजना आवश्यक है।
- लड़कियॉ स्कूल में नाम लिखा सकें।
- ताकि लड़कियॉ अपनी प्रतिभा व क्षमता के संबंध में एक सही धारणा सुनिश्चित कर सकें।
- ताकि वे आत्म विश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़ सकें।

सभी को यह समझना आवश्यक है कि नारी भी मनुष्य है। उन्हें भी समान अधिकार देने से परिवार की समृद्धि, गृह की समृद्धि एवं समाज की समृद्धि संभव है।

– जैण्डर सेन्सिटिव कहाँनियों का प्रयोग :–

कक्षा में निम्न प्रकार की कहानियां सुनाकर बच्चों को प्रोत्साहित करें :–

कहानी नं0 -1

रूचि पालीवाल ने बच्चों को डूबने से बचाया

यह घटना 30 जून 1995 की है। हरिद्वार में गंगा नदी में हमेशा की तरह भीड़–भाड़ थी। एक छः वर्षीय बालक नदी के किनारे खेल रहा था। खेलते–खेलते बालक फिसल कर नदी में गिर गया और डूबने लगा। तभी उधर से कु0 रूचि गुजर रही थी। बच्चे को डूबते देखकर 15 वर्षीय रूचि ने आव देखा ना ताव। झट से बस्ता फेंका, और कूद गयी गंगा नदी में। रूचि ने बालक को पकड़ा लेकिन तेज धारा के आगे उसकी एक न चली और दोनों डुबकियां खाने लगे। फिर भी रूचि ने हिम्मत नहीं हारी और बच्चे को अपने से दूर धकेल दिया ताकि खुद को सम्हाल सके। लेकिन बच्चा फिर से डूबने लगा। रूचि ने एक बार फिर पानी की धार के साथ

अनअपेक्षित संघर्ष किया और बच्चे की कमीज का एक हिस्सा उसकी पकड़ में आ गया। विपरीत दिशा में बह रही लहरों से आधे घण्टे तक जूझने के उपरान्त रूचि बच्चे को किनारे तक खींच ही लायी। इसप्रकार रूचि की समझ–बूझ और साहस ने छः वर्षीय छोटू को नयी जिन्दगी दी।

(राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत : 1994)

जन्मतिथि : 10.2.1980

पता : सुपुत्री श्री संजय कुमार पालीवाल

11/20 बाग मुजफ्फरखान

आगरा उत्तरप्रदेश – 282001

अपनी जान देकर बच्चे की जान बचायी मनीषा ने

यह घटना अलीगढ़ जनपद की है। 11 मई 1992 की शाम मनीषा के लिए सप्ताह में एक बार आती है जब वह अपनी माँ के साथ मंदिर जाती थी। आज के दिन मनीषा इसलिए भी चहक रही थी कि उसे मेले में माँ ने खिलौने दिलायेगी ऐसा वादा माँ ने किया था। 5 वर्षीय गुड़िया सी दिखने वाली मनीषा माँ की ऊंगली पकड़े माँ को उन सामानो के नाम गिनवा रही थी जो उसे मेले से लेना था तभी उसकी नजर उस बच्चे पर पड़ी जो तेजी से आ रही स्कूटर की पहिया की चपेट में आने वाला था। मनीषा ने झट से माँ के हाथ से अपने हाथ को झटका और दौड़कर बच्चे को धक्का दिया। बच्चा तो सड़क के किनारे पहुंच कर बच गया परन्तु मनीषा खुद एक कार के पहिये की चपेट में आ गयी। वहाँ खड़े लोग दंग रह गये। सबकी आंखों में यह दृश्य देखकर आँसू आ गये। एक बच्चे को बचाने के लिए पांच वर्षीय मनीषा अपनी जिन्दगी कुर्बान कर चुकी थी।

(राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत : 1994)

जन्मतिथि : 23.2.1987

पता : सुपुत्री श्री महेन्द्र प्रताप सिंह

139 विष्णुपुरी, पी0एस0 कुआरती

जिला अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

<u>वास्तविक कहानी</u>

१ सरोजनी नायडू महात्मा गांधी के अनुयायी थी। जीवन के ३० वर्ष तक वे भारत की आजादी के संग्राम में सक्रिय रूप से युक्त थीं। स्वाधीनता संग्राम में युक्त रहते समय उन्हें जेल भी जाना पड़ा वे एक यशस्वी कवियत्री भी थीं। वे बांग्ला, अंग्रेजी, उर्दू तथा पारसी देश की विभिन्न भाषाओं की ज्ञाता थीं। अंग्रेजी भाषा में लिखी उनकी कविताएं ही अंग्रेजी साहित्य में उनके महत्वपूर्ण योगदान रूप में स्वीकृत हुई। वे एक सुवक्ता थीं। एक धनी परिवार की होते हुए भी, देश की स्वाधीनता के लिये उन्होंनें, सब कुछ त्याग कर दिया था।

२ महाराष्ट्र के शिवाजी ने मुगलों के विरूद्ध स्वाधीनता रक्षा की लड़ाई चलाई थी, आजीवन कूटनीति में उनकी शिक्षिका थीं उनकी माता–जीजाबाई उत्तम प्रशासन तथा राजकाज चलाने का तौर तरीका भी उन्होंने अपने लड़कों को सिखाया था।

३ रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध किया था। बुन्देलखंड के एक राज्य की रानी थीं। उस राज्य का नाम झांसी था। उन्होंने महिलाओं की एक वाहिनी बनाई थी जो पुरूषों की वाहिनियों से भी उच्च स्तर की व साहसी थी।

४ सावित्री बाई फुले थी– पुणे की प्रथम महिला शिक्षिका, वर्ष था सन् 1851 अंग्रेजों का विरोध सहकर भी उन्होंनें सामने खड़े होकर लड़कियों के लिए एक स्कूल बनवाया था। नारी शिक्षा के विरोध में ही लोगों ने उन्हें काफी यातना दी, अपमान किया, मारपीट की। लेकिन वो जरा भी विचलित नहीं हुयीं। वे महाराष्ट्र में नारी शिक्षा की संस्थापक ही थीं।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नारी के अवदान(योगदान एवं उसका फल) की कहानी समाचार पत्र से उद्धित

१ पूणे शहर के नानापेट इलाके में श्रीमती शकुन्तला परदेसी ढलाई व अन्य अनेक मशीनों के पुर्जों का कारखाना चलाती हैं। बचपन से ही वे मशीन के विषय में उत्साहित थीं। उनके कारखाने में काम सीखे हुये मिस्त्रियों की छोटे–छोटे कारखानों में बहुत मांग थी, क्योंकि वो उच्च स्तरीय एवं आवश्यक नियमों के बारें में महारथ प्राप्त करवा देती थीं।

२ आसमान से कूदने का खेल एक साहसिक कदम का दावा भरता है। रविवाला, कलकत्ता निवासी आसमान से कूदने वाली एक आसाधारण खिलाड़ी हैं, जो पैराशूट से भी कूद सकती हैं।

३ इण्डियन एयरलाइन्स ने कलकत्ता से शिलचर यातायात विभाग का भार पूर्णतया दो महिला पायलेट–सौदामिनी देशमुख व निवोदिता भसीन पर सौंपा। दोनों ही लगभग 6 वर्ष से इण्डियन एयरलाइन्स का विमान चला रही हैं इनसे पहले कैप्टन श्रीमती बनर्जी एक असाधारण पाइलेट के रूप में प्रसिद्ध थीं। इन दोनों पाइलेटों की इच्छा है कि वे और भी प्लेन उड़ायें।

४ सन् 1984 के माह में एक युवा महिला बछेन्द्री पाल ने एवरेस्ट की चोटी पर विजय प्राप्त की। उनसे पहले मात्र 3 महिलाओं ने यह सफलता अर्जित की थी। बछेन्द्री संस्कृत विषय से परास्नातक हैं। पर्वतारोहण उनका एक सर्वप्रिय शौक है। एवरेस्ट अभियान में उनकी सभी साथी महिला थीं।

५ सन् 1983 से अदिति पंत वैज्ञानिक रूप से वर्णनाकारिणी, भारतीय अंटार्कटिका यात्री दल की एक नियमित सदस्या हैं अदिति पूना विश्वविद्यालय की जीव विज्ञान में स्नातक हैं।

६ कल्पना चावला नासा द्वारा प्रक्षेपित अन्तरिक्ष यान की प्रथम महिला पायलेट हैं।

७ हरियाणा की भारतीय खाद्य निगम में कार्यरत कर्ण मलेश्वरी ओलम्पिक खेलों की व्यक्तिगत स्पर्धा में पदक प्राप्त करने वाली भारत की तीसरी खिलाड़ी हैं। भारोत्तोलन के 69 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त करने वाली कर्ण मलेश्वरी भारत की प्रथम महिला पदक विजेता है। इस स्पर्धा में जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए मलेश्वरी ने स्पैच में 110 किग्रा तथा क्लीन एण्ड जर्क में 130 किग्रा (कुल 240 किग्रा) वजन उठाने का प्रदर्शन किया।

८ मूल्यांकन पत्र

क्या लड़कियों को पढ़ाना जरूरी? क्यों?

शिक्षा ही वह अस्त्र है जिससे बालिकाओं की मानसिक क्षमताओं का विकास होता है, शिक्षा आत्मविश्वास पैदा करती है तथा निर्णय करना सिखाती है। शिक्षा गांव से बाहर भी कुछ है का दायरा बढ़ाती है।

इसलिए महिलायें भले ही नौकरी न करें पर पढ़ना उन्हें जरूरी है। ताकि सकारात्मक प्रभाव उनके जीवन में परिलक्षित हो सके। जैसे –शादी व प्रथम गर्भ धारण की सही उम्र, बच्चों की सेहत व उम्र, परिवार में बच्चों की संख्या में कमी।

चित्र

लड़कियों को पढ़ाना जरूरी है। आपके विचार से क्यों? कृपया कारण बताए ।

लड़कियों के सन्दर्भ में शिक्षक की क्या ज़िम्मेदारी है?

शिक्षक होने के नाते आपको सुनिश्चित करना है कि –

- ♦ लड़कियाँ पाठशाला में दाखिल हों।
- ♦ लड़कियाँ पढ़ाई बीच में न छोड़े।
- ♦ लड़कियों को उच्च स्तरीय शिक्षा मिले।
- ♦ शिक्षक होने के कारण आप जानिये कि लड़कियां पाठशाला नहीं जाती क्योंकि वे पढना नही चाहती या इसके और कारण है?
- ♦ मानसिक व सामाजिक विकास के लिये बच्चियों का पाठशाला जाना जरूरी है।

- पाठशाला न जाने पर वो घर का काम करती है। खाना पकाना, सफाई करना, पशुओं की देखभाल, पानी लाना, ईधन लानां इत्यादि।

चित्र

लड़कियों के पाठशाला न जाने के अनेक कारण है। आपके क्षेत्र में इसके क्या कारण है ?

लड़कियां पाठशाला न छोड़े इसको सुनिश्चित करने के लिये शिक्षक क्या कर सकतें है ?

पाठशाला आना बन्द कर देने के कारण :–

- अनियमित उपस्थिति
- देर से विद्यालय पहुॅचने पर सजा मिलना
- किसी विशेष बन्दिश के कारण
- छोटे भाई बहनों की देखभाल
- घर पर कार्य करने के कारण

निदान :–

- लचीला रवैया अपनाए।
- देर से आने पर सज़ा मत दें।
- उनके घरेलू कारणों को सुलझाना चाहें।

उपरोक्त निदान से बालिकाए कुछ घंटे पढ़ सकेगी।

चित्र

लड़कियों की पाठशाला में पढ़ाई जारी रखवाने के लिए आप क्या कर सकते है?

☛ यह भी करें

१०. कक्षा में बालिका ही मॉनीटर बनाई जाए।

११. कक्षा में उपस्थिति **Alphabetical** क्रम में बिना किसी भेदभाव में बुलायी जाए तथा बालिकाओं के उनके प्रथम नाम से बुलाया जाए।

१२. विद्यालय /ई.सी.सी.ई. केन्द्रों पर होने वाली प्रातः प्रार्थना बलिका द्वारा भी कराई जाए तथा संकल्प भी बालिका द्वारा ही दिलाया जाए।

१३. बालिकाए भी उपस्थिति लें।

१४. बालिकाओं को कक्षा में प्रथम पंक्ति में जगह दें।

१५. बालिकाओं से भी पी.टी. कराएं।

१६. विद्यालय के कार्यक्रमों में बालिकाएं भी सक्रिय रूप से प्रतिभाग करें।

१७. विद्यालय में होने वाली गतिविधियों में विशेष तौर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं में बालिकाओं को प्रतिभाग करने हेतु प्रोत्साहित किया जाए।

१८. बालिकाओं को विद्यालय में होने वाली गतिविधियां खेलकूद कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने हेतु प्राथमिकता दें।

सुगमकर्ता हेतु विशेष निर्देश :–

सुगमकर्ता को समूह में चर्चा द्वारा व तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट करा देना चाहिये कि विद्यालय में अध्यापकों का व्यवहार व सामान्य वातावरण भी किस प्रकार बालिका शिक्षा के लिऐ उत्तरदायी है। (प्रत्येक कहानी से) परिस्थितियों तथा केस स्टडीज़ पर सभी तीनों समूहों को अपने अपने समूह की आख्या प्रस्तुत करने को कहेंगें। इस प्रकार के विश्लेषण के उपरान्त सभी प्रशिक्षणार्थियों को विद्यालय भ्रमण कराया जाऐ।

सुगमकर्त्ता अध्यापकों द्वारा अनजाने में बालिकाओं के प्रति किये गये उपेक्षापूर्ण व्यवहार के आधार पर अध्यापकों से चर्चा कर विषय को विश्लेषित करेंगा।

सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों से विद्यालय को कक्षा का शान्तिपूर्ण ढ़ग से कक्षा की प्रक्रियाओं को बाधित किये बिना अवलोकन करने का अवसर प्रदान करें। भ्रमण से वापस आने पर प्रतिभागियों से संक्षिप्त में पूर्व में प्रस्तुत बिंदूओं में से अथवा अन्य कोई बिंदू जो बालिकाओं के

प्रतिभेद प्रदर्शित करने वाली हो पूछे तथा चार्ट पर टिक करते जायें, चर्चा के बाद विद्यालय के कक्षा कक्ष की वास्तविक स्थिति से अवगत करायें।

सुगमकर्त्ता निम्न बिंदुओं को चार्ट पेपर पर (बड़े बड़े अक्षरों में जो कि पूर्व में ही तैयार कर के लायेगा) प्रस्तुत करेगा।

भ्रमण से पूर्व सुगमकर्त्ता द्वारा विचार करवाये जाने हेतु बिंदू :–

– अध्यापकों के व्यवहार में लिंग भेदभाव वाली गतिविधियॉ क्यो परिलक्षित होती है?

– लड़कियों के सीखने में आयी रूकावटों को ध्यान में क्यों नहीं लाया जाता?

– क्या भेदभाव के व्यवहार के दुष्प्रभाव को जानने की कोशिश की जाती है?

– क्या लड़कियों की आवश्यकतानुसार विद्यालयी वातावरण को मापा गया है?

– क्या प्रशिक्षण गतिविधियों व अध्ययन के सुधारात्मक कृत्य पर विचार किया गया?

– भ्रमण के पश्चात सुगमकर्त्ता व प्रतिभागियों के बीच इस प्रकार की बातें होगी।

- ♦ प्राकृतिक रूप से लड़कों व लड़कियों में काई अन्तर नहीं है परन्तु समाज व घर में उनके कार्य बटे होते हैं। घर व समाज में उससे सेवा कार्यों की छोटी आयु से ही उम्मीद की जाती है। जैसे –जैसे वह बड़ी होती जाती है यह भूमिका बढ़ती जाती है।
- ♦ छात्राएं पराम्परिक सुविधाओं से भी स्वतः ही वंचित हो जाती है। जैसे स्वास्थ्य,मनोरंजन,पोषक शिक्षा इत्यादि।
- ♦ लड़कियां स्वाभाविक रूप से शर्मीली नहीं होती है परन्तु कक्षा में बातचीत, चर्चा संवाद में भेदभाव के कारण वह किसी भी बात को पूछने व प्रश्न का उत्तर देने में हिचकिचाती है।
- ♦ कभी कभी कक्षाओ में उत्साहित होकर साथियों के साथ बहस करती है। लेकिन फिर भी कभी–कभी अध्यापकों व यहॉ तक कि अध्यापिकाओ द्वारा भी उन पर टिप्पणी की जाती है।

– पाठ्य सहगामी क्रियाओं में उनकी प्रतिभागिता नगण्य रख्री जाती हैं और जैसे –जैसे उनकी आयु बढ़ती जाती है शालात्याग का प्रतिशत बढ़ता जाता है। अधिकतर मामलों में 9+ आयु होने पर ,सयानी कहकर,अथवा घर के कार्यों में लगाकर विद्यालय ते हटा दिया जाता है।

– कक्षा से बाहर लड़कों का बोल बाला रहता है और सभी सुविधाएं होने पर भी लड़कियां उनसे दूर रह जाती है। 56% लड़के अपना विद्यालय में खाली समय खेलकूद व अन्य गतिविधियों में व्यतीत करते है। जबकि गांव में लड़कियां 20% से कम व शहर में 20% से कुछ अधिक इस प्रकार की गतिविधियों में भाग लेती है।

शैक्षिक पक्ष और सीखने के स्तर में लड़कियाँ पीछे नहीं रहती। वास्तव में उनकी शैक्षिक अभिरुचि का सामान्य स्तर लड़कों की तुलना में ज्यादा होता है। फिर भी यदि उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास का मूल्यांकन करें, तो यह पाया गया कि अर्न्तमुखी रहने को प्रेरित किये जाने के कारण उनके व्यक्तित्व विकास का पूर्ण अवसर नहीं मिल पाता।

यदि ग्रामीण व शहरी छात्राओं के बीच तुलना करें, तो उनकी प्रतिभा में अन्तर साफ परिलक्षित होता है, कि किसमें ज्यादा दृढ़ निश्चय है, प्रतिस्पर्द्धा है और कक्षा में बैठने व भाग लेने में ज्यादा प्रतिभागिता है। अध्यापकों व विद्यार्थियों के सम्बन्ध में भी विषमता पायी जाती है। यह विषमता लिंगपूर्वाग्रह के कारण होती है। जैसे – औपचारिक संवादों में, प्रथाओं में और विभिन्न वाक्यांशों में।

पुरुष और महिला दोनों ही अध्यापक, खेल में व शिक्षा में लड़कों को वरीयता प्रदान करते हैं। बहुत से अध्यापक लिंगभेद, शैक्षिक समस्याओं और सामाजिक मापदण्ड को व्याख्यांकित नहीं करते और आशावादी दृष्टिकोण नहीं अपनाते हैं, इस कारण संवेदीकरण की परेशानी ज्यादा बढ़ रही है। बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोंच न होना ही बालिका शिक्षा की प्रगति में एक मात्र कारण है।

चित्र नं0 3 के संबंध में समूह का विचार :–

- घर के सभी पुरूष खाना खा रहे है।
- लड़की खाना परोस रही है।
- मॉ चौके में काम कर रही है।

निष्कर्ष :–सुगमकर्त्ता द्वारा स्पष्ट किया जायेगा।

- पुरूष खाना पहले खाते है।
- बचा हुआ खाना महिलाओ के हिस्से में आता है।

चित्र नं0 4 के संबंध में समूह 4 का विचार :–

- लड़का डाक्टरी की पढ़ाई पढ़ने के लिए जा रहा है।
- लड़की को पढ़ने के लिए नहीं भेजा जा रहा है।

निष्कर्ष :–सुगमकर्त्ता द्वारा स्पष्ट किया जायेगा।

- समाज में लड़के–लड़की का विभेद उभर कर सामने है।
- लड़की को पराया धन समझ कर शिक्षा से वंचित रखा जा रहा है।

- लड़के के भविष्य के लिए समाज चिन्तित है।
- लड़की के भविष्य पर मौन। ऐसा क्यों?
- क्या यह सही है? यदि नहीं तो क्यों?

सुगमकर्त्ता के लिए निर्देश :—

- इस अभ्यास को आये हुए विचारों को सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों से पूछ पूछ कर क्रमवार चार्ट पर लिखेगा।
- एक—एक करके समस्त प्रतिभागियों के बीच अवलोकन व निष्कर्ष समूह द्वारा प्रस्तुत करके, समूह की प्रतिक्रिया भी जानेगा।
- लिंग भेद के कारण व्यवहार में अन्तर (कहानी पर चर्चा द्वारा)

सुगमकर्त्ता के लिए निर्देश :—

सुगमकर्त्ता द्वारा इस सत्र में प्रतिभागियों को पुनः तीन समूहों में बॉटा जायेगा। सुगमकर्त्ता यह ध्यान रखे कि प्रथम अभ्यास क्रिया के समूह प्रतिभागी, इस समूह में अलग—अलग होगें। नवीन समूह को एक—एक कहानी दी जायेगी, जिस पर उनसे चर्चा व विश्लेषण कराया जायेगा। यह सत्र बीस मिनट का होगा।

'लिंग भेद के कारण व्यवहार में अन्तर' {कहानी द्वारा}

कहानी नं0–1 रूपा की कहानी

"बेवकूफ रोज़ देर से आती हों, नालायक।" अध्यापक ने डॉटते हुए अपना सारा गुस्सा उस पर उतार दिया था। मास्टर साहब के हाथ में पतले से डंडे को देखकर रूपा थर–थर कांपने लगी थी। तभी दूर से हेड मास्टर साहब ने उनको पुकार लिया, 'अरे यादव जी, जरा इधर आना'। रूपा की जान में जान आ गयी थी। मास्टर साहब ने उसे खा जाने वाली नज़रों से कहा "चल बैठ", सबसे पीछे, नालायक कही की। आंख नही खुलती सुबह ! 'और वह सबसे पीछे चोर की तरह बैठ गयी थी उसने श्यामपट्ट की ओर देखा, लिखा था 'नकल करो' रूपा कापी कलम निकाल कर सोचती रही क्या मै नालायक हूँ ? रूपा की मां टी0 बी0 की मरीज थी। दो बड़े भाई एक छोटी बहन 3 साल की और वह भी सिर्फ कक्षा 4 में थी। उसे रोज सुबह 6 बजे से पहले बिस्तर छोड़ना पड़ रहा था। जो उसके खेलने के दिन थे, मगर वह सबसे पहले निवृत्त होकर भाइयों व पिता को कलेवा देती, मां को दवाई देती और सबके लिये खाना बनाती, मां देर से उठ कर अपनी हिम्मत के अनुसार हलका फुलका कार्य कर लेती थी, बर्तन धोने में भी मां की पूरी मद्द करना उसका काम था, विद्यालय का गृह कार्य वह विद्यालय से आते ही कर लेती थी फिर शाम का खाना पका, सबको खिलाकर वह स्वयं खाती, फिर सारे घरेलू कार्य निबटा कर उसे फुरसत मिल पाती। यह चक्र पिछले तीन माह से चल रहा था। इसी वजह से रूपा को रोज विद्यालय जाने में देर हो जाती थी। और वह विद्यालय छोड़ना नहीं चाहती थी, मगर उस दिन तो हद हो गई थी, गुरू जी प्रधानाध्यापक के पास से वापस आ गये थे। आज फिर वह डन्डे की मार से दुखी हो गयी थी। डन्डे तो हाथ पर ही पड़े थे, मगर रूपा का नन्हा मासूम दिल रो रहा था, बार–बार की डांट से होने वाली ज़िल्लत से शर्मिन्दा परन्तु ज़हीन रूपा घर बैठ गयी। उसे आज विद्यालय गये पूरा 1 वर्ष बीत गया था। परन्तु विद्यालय जाने का सपना आज भी आंखों में तैरता रहता था।

अचानक मां के खांसने की आवाज से वह यादों की दुनियां से वापस आ गई।

"क्या बात है मॉ ?"

"बेटा जरा एक लोटा पानी तो देना।" और वह पानी लेने चली गयी थी............................

विचारणीय बिन्दु – सुगमकर्त्ता प्रतिभागियों से विचार करवायेगा।

- क्या रूपा सच में नालायक है ?
- क्या विद्यालय में पड़ने वाली डांट के लिए रूपा ही जिम्मेदार है ?
- रूपा के स्कूल छोड़ कर घर बैठ जाने के लिये कौन जिम्मेदार है ?
- क्या अध्यापक ने रूपा की परिस्थितियों को जानने की कोशिश की ?
- क्या रूपा का विद्यालय छोड़ना रोका जा सकता था? यदि हां तो कैसे ?